REPORT OF
THEATRE WORKSHOP AND PERFORMANCE FOR PRE SERVICE TEACHER TRAINEES OF RIE, BHOPAL

रपट

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल के सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए थिएटर कार्यशाला और प्रदर्शन

PAC-23.33

Dr. Arunabh Saurabh

Programme Coordinator

Regional Institute of Education, Bhopal
2022-23

REPORT

THEATRE WORKSHOP AND PERFORMANCE FOR PRE SERVICE TEACHER TRAINEES OF RIE, BHOPAL

© RIE, NCERT, Bhopal,

Dr. Arunabh Saurabh
Programme Coordinator

Regional Institute of Education, NCERT
Shyamla Hills Bhopal
2022-23

प्रस्तावना

शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है । नाटक कला और सर्जना का श्रेष्ठ माध्यम है। इस दस दिवसीय नाट्य कार्यशाला का उद्देश्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित है। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल विद्यार्थियों में रचनात्मकता के विकास का भरपूर अवसर प्रदान करता है, यह कार्यशाला उन्हीं मूल्यों की तलाश है। इससे विद्यार्थियों का जीवन,कला और रचनात्मक्ता का ही सम्पूर्ण विकास नहीं होगा अपितु नाट्य-कौशल के विकास से वे बेहतर अध्यापन कला का भी विकास कर सकेंगे । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में जिन पारम्परिक विविध भारतीय कलाओं के माध्यम से शिक्षा देने की बात कही गयी है इस नाट्य कार्यशाला में उनका समाहार किया गया है । इससे विद्यार्थी बहुत कुछ सीखते हैं जैसे- मौखिक वाचन और लेखनशक्ति का विकास, भावनाओं का उद्दात्तीकरण और उनका व्यक्तित्व निर्माण, विवेक सम्पन्नता और भावनात्मक अभिव्यक्ति को सही दिशा और दृष्टि प्रदान करना, नाटक की अभिनेयता से जुडकर साहित्य की अन्य विधाओं से ज्ञान अर्जित करना, नैतिक मूल्यों के विस्तार से वैश्विक मूल्यों का निर्माण करना, जीवन दर्शन का तार्किक विकास करना, पारम्परिक संस्कार तथा संस्कृति दर्शन इतिहास समाज शास्त्र से नई पीढी को अवगत कराना तथा उनके बीच उदार दृष्टि का विकास करना, साहित्यिक विकास के पठनपाठन से भाषा के विविध रूपों त-था उच्चारण कौशल में दक्षता,) रचनात्मक एवं सृजनात्मक प्रतिभा को पहचानना और उसका विकास करना, कल्पना लोक को तर्क संगत आधार पर रूपाकार करने की क्षमता का विकास करना, सामूहिक कला और प्रदर्शनकारी कला के महत्त्व को समझना, सामाजिक संबंधों से स्वयं को जोड कर देखने की दृष्टि का विकास करना आदि कई व्यापक उद्देश्यों की पूर्ति यहाँ सम्भव है।

कला माध्यम जीवन को सुव्यवस्थित करता है, जीवन को गतिशील बनाता है। बहुलतावादी, बहुपक्षीय, और अनेकता में एकता से भरपूर, बहुसांस्कृतिक देश के मिज़ाज़ और रवायत को समझने हेतु भारत की पारम्परिक कला को समझना बेहद जरूरी है। हम भारत को समझकर भारतीय ज़मीन को समझकर सुखी,सुंदर और कलात्मक समाज बनाने में खुद को तैयार कर सकें। समझ को विकसित करने हेतु नाटक ज्ञान का एक बडा अस्त्र है और हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है- नाटक । भाषा और समझ का गहरा संबंध है। शिक्षा में समझ की जरुरत को विकसित करने की नीतियाँ एक रचनात्मक सोच का परिणाम लेकर आती है। संवेदनात्मक विकास हेतु समझ के विकास की जरुरत है. समझ विकसित होने से ही रचनात्मकता का विकास होगा इन सबके केंद्र में नाटक है !

हमारा जीवन विविधताओं का कोलाज है विविधता हमारी ताक़त है । हमारा मकसद विद्यार्थियों को सिर्फ पाठ्यक्रम में पारंगत नहीं बनाना है अपितु उन्हें बेहतर और बृहत्तर मनुष्य बनाना है। ज्ञान की उस परम्परा से जोडना है जिसमें वे तर्क,विवेक,वैज्ञानिकता और स्वस्थ रचनात्मकता के साथ गतिशील जीवन से जुड सकें। हमारे विद्यार्थी इस बात को समझें कि इस वीं सदी में वे भारत की ताक़त हैं21 और हमारी संस्कृति के संरक्षक भी।

-डॉ. अरुणाभ सौरभ

कार्यक्रम समन्वयक

आभार

सर्वप्रथम एनसीईआरटी नई दिल्ली का आभार। एनसीईआरटी के निदेशक प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी जी का आभार, संयुक्त निदेशक प्रो. श्रीधर श्रीवास्तव जी का विशेष आभार। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल का आभार जो इस पुनीत कार्य में मेरा भरपूर सहयोग दिया, संस्थान के प्राचार्य प्रो. जयदीप मंडल जी, प्रो. बी रमेश बाबू जी (अध्यक्ष शिक्षा विभाग), प्रो. आई.बी चुगतई जी का आभार। विस्तार शिक्षा विभाग के अध्यक्ष प्रो. प्रवीण कुलश्रेष्ठ एवं प्रो. चित्रा सिंह जी का अथाह स्नेह, सहयोग हमारी नाट्य कार्यशाला को प्राप्त हुआ है, आपका बहुत-बहुत आभार। संयुक्त निदेशक,पंसुंशके व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल के साथ-साथ अपने संस्थान के सभी वरिष्ठ सहकर्मियों के सहयोग से यह कार्यक्रम सम्भव हो पाता है, मैं प्रो. निधि तिवारी जी (अध्यक्ष,सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग) प्रो. रत्नमाला आर्या जी(अध्य प्रो. लल्लन कुमार तिवारी जी (अध्यक्ष, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग),प्रो रश्मि सिंघई, डॉ अश्विनी कुमार गर्ग जी(मुख्य सलाहकार, छात्र परिषद), डॉ. निताई चरण ओझा जी(अध्यक्ष अकादमिक शाखा, अध्यक्ष स्टूडियो) सभी छात्रावासों के अधीक्षक गण यथा श्री लोकेंद्र सिंह चौहान जी, डॉ. कल्पना मस्की जी, डॉ श्रुति त्रिपाठी जी,डॉ. संगीता पेठिया जी, डॉ. सौरभ कुमार जी, डॉ. गंगा महतो जी एवं श्री महेश आसुदानी(प्राशसनिक अधिकारी), श्री कमलेश तायल जी (वित्त अधिकारी),श्री संजय गोखे जी (सुरक्षा प्रभारी) और समस्त संस्थान परिवार के प्रति आभार।

कार्यशाला के प्रथम सोपान में नाटक आद्य नायिका के मंचन और इस दस दिवसीय कार्यशाला का निर्देशन किया श्री नीलेश कुमार दीपक ने आपका सर्वाधिक आभार, श्री लखन लाल अहिरवार (संगीत निर्देशन), सुश्री आस्था गुप्ता जी सहित हिंदी रंगभूमि दिल्ली राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से प्रशिक्षित सभी कलाकार मित्रों का आभार! आप सबके सहयोग और अनथक श्रम से ही यह कार्यशाला सम्भव हो पाया!

दूसरे सोपान में भीष्म साहनी रचित 'कबिरा खडा बज़ार में' का मंचन किया गया! इस कार्यशाला का निर्देशन किया श्री अविजित सोलंकी जी ने उनका और पूरी टीम का आभार!

अंत में इस कार्यक्रम के सह संयोजक डॉ. सुरेश मकवाणा जी जिन्होने हमारे साथ अथाह श्रम किया आपका विशेष आभार। इस कार्यक्रम से जुडे श्री प्रणव पवार,सुश्री रिया गौतम सहित सभी विद्यार्थियों का आभार।

-डॉ. अरुणाभ सौरभ

नाटकः एक परिचय

नाटक साहित्य की प्राचीनतम और प्रायोगिक विधा है । नाटक में कला के सभी स्वरूप और विज्ञान की दृश्य-श्रव्य व्यवस्था का सम्पूर्ण अनुपालन किया जाता है । इस विधा के साहित्य की तमाम विधाओं का समावेश है । नाटक को ध्यान में रखकर ही साहित्यशास्त्र के सभी सिद्धांत बने हैं। नाटक शब्द की उत्पत्ति 'नट धातुसे हुई है जिसका तात्पर्य है—अभिनय।

संस्कृत साहित्य में इसे ' रूपक ' नाम भी दिया गया है।

नाटक का अर्थ है ' नट ' |

कार्य अनवीकरण में कुशल व्यक्ति संबंध रखने के कारण ही विधा में नाटक कहलाते हैं।

वस्तुतः नाटक , साहित्य की वह विधा है , जिसकी सफलता का परीक्षण रंगमंच पर होता है। किंतु रंगमंच युग विशेष की जनरुचि और तत्कालीन आर्थिक व्यवस्था पर निर्भर होता है इसलिए समय के साथ नाटक के स्वरुप में भी परिवर्तन होता है।

'काव्येषुंनाटकंरम्यम् —संस्कृत का यह कथन नाटक पर बिल्कुल सटीक बैठता है ।

संस्कृत नाट्यपरम्परा में भी नाटक काव्य है और एक विशेष प्रकार का काव्य है, ..दृश्यकाव्य। 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' कहकर उसकी विशिष्टता ही रेखांकित की गयी है।

लेखन से लेकर प्रस्तुतीकरण तक नाटक में कई कलाओं का संश्लिष्ट रूप होता है-तब कहीं वह अखण्ड सत्य और काव्यात्मक सौन्दर्य की विलक्षण सृष्टि कर पाता है। रंगमंच पर भी एक काव्य की सृष्टि होती है विभिन्न माध्यमों से, कलाओं से जिससे रंगमंच एक कार्य का, कृति का रूप लेता है। आस्वादन और सम्प्रेषण दोनों साथ-साथ चलते हैं। अनेक प्रकार के भावों, अवस्थाओं से युक्त, रस भाव, क्रियाओं के अभिनय, कर्म द्वारा संसार को सुख-शान्ति देने वाला यह नाट्य इसीलिए हमारे यहाँ विलक्षण कृति माना गया है।

आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय में नाट्य को तीनों लोकों के विशाल भावों का अनुकीर्तन कहा है तथा इसे सार्ववर्णिक पंचम वेद बतलाया है। भरत के अनुसार ऐसा कोई ज्ञान शिल्प, विद्या, योग एवं कर्म नहीं है जो नाटक में दिखाई न पड़े -

न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
न स योगो न तत्कर्म नाट्ऽयेस्मिन् यन्न दृष्यते॥

संस्कृत नाटकों की रचना के मूल में प्रमुख उद्देष्य दुःखी, थके हुये एवं शोक से त्रस्त लोगों का मनोरंजन करना रहा है जैसा कि नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय में भरतमुनि ने लिखा है:-

दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्।
विश्रामजननं लोके नाट्यमेतद् भविष्यति॥
विनोदजननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति।।।

नाटक के माध्यम से हम कला के समस्त स्वरूपों में प्रविष्ट होते हैं। नाटक जहाँ कला का एक श्रेष्ठ माध्यम है, एक समेकित माध्यम है वहीं नाटक में प्रकाश व्यवस्था, ध्वनि व्यवस्था और वैज्ञानिक उपकरणों का उपयोग होता है। नाटक के माध्यम से एक शिक्षार्थी का सर्वांगीण विकास होता है इसीलिए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में नाटक बहुत उपयोगी और सार्थक सिद्ध हो सकता है। ज्ञान के समस्त अनुशासनों को नाटक के माध्यम से हम सुगमता पूर्वक पढा सकते हैं। नाट्य शिक्षण की मदद से हम सभी विषयों को सरलतापूर्वक पढा सकते हैं। इसकी भूमिका तब और महत्वपूर्ण हो जाती है जब आधुनिक तकनीक से जोडकर कक्षा में सर्वसुलभ बनाने के साथ ही विद्यार्थियों की रुचि को विकसित किया जा सकता है।

नाटक को ध्यान में रखकर ही साहित्य शास्त्र के सभी सिद्धांतों की निर्मिति हुई है। नाटकीय कथानक ऐसा होना चाहिए जिसका बहिरंग पक्ष और अंतरंग पक्ष में आकर्षक तत्व सम्मिलित हो। किसी भी नाटक में देश काल, वातावरण बहिरंग पक्ष है और पात्रों की परिकल्पना अंतरंग पक्ष है। जिस समय कथानक का प्रयोग होता है उस समय का युगीन परिवेश, रहन-सहन, भाषा और संवादों का जीता जागता वर्णन होना चाहिए।

नाटक के तत्व

नाटक

नाटक दृश्य काव्य का एक प्रकार है।

संवादों में या कथोपकथन में कही गई कथा ही नाटक है। प्रत्येक कथा के मूल में जिज्ञासा होती है। जिज्ञासा के बिना कहानी अच्छी नहीं होती। कथा का चलन्त रूप ही नाटक है।

नाटक में क्रिया व्यापार का होना जरूरी है | यह क्रिया व्यापार पात्रों का होता है | क्रिया व्यापार में संवादों का होना अति आवश्यक है। क्रिया व्यापार ही अभिनय है।

नाटक - रंगमंच

क्रियाल्यापार

अभिनय

संवाद

कथा

मंचन के लिए लिखी जाने वाली कथा जिसमें संवाद हो नाटक कहलाती है।

नाटक के तत्व

'नाटक के छः तत्व माने जाते हैं -

(क) कथावस्तु

(ख) पात्र और चरित्र चित्रण

(ग) संवाद / कथोपकथन

(घ) देशकाल / वातावरण

(ङ) भाषा शैली

(च) उद्देश्य

(क) कथावस्तु : कथावस्तु नाटक' का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। इसके बिना नाटक की कल्पना नहीं की जा सकती। विभिन्न आधारों पर कथावस्तु (नाटकीय) के भेद किए जाते हैं

(1) प्रसार की दृष्टि से - प्रसार की दृष्टि से कथावस्तु के दो प्रकार होते हैं -

(i) आधिकारिक (ii) प्रासंगिक

(i) आधिकारिक कथावस्तु **-** वैसी कहानियाँ जो शुरू से अंत तक चलती है, उसे आधिकारिक कथावस्तु कहते हैं। इसी कथा के नायक को ही अंततः फल प्राप्त होता है।

जैसे - राम की कथा आधिकारिक कथा है।

(ii) प्रासांगिक - वैसी कथाएँ जो प्रसंगवश बीच-बीच में आकर आधिकारिक कथा को आगे बढ़ाने में योग है, उसे ही प्रासांगिक कथा कहते हैं। घटना को आगे बढ़ाने के लिए प्रासांगिक कथा का होना अत्यावश्यक होता है।

जैसे अंगद, मंथरा, हुनुमान, विभीषण की "कथा राम कथा को आगे बढ़ाती है।

प्रसांगिक कथावस्तु के दो उपभेद होते हैं -

(क) पताका

(ख) प्रकरी

(क) पताका **-** वैसी प्रासांगिक कथाएँ जो मुख्य कथा के साथ लगातार या लंबे समय 'तक चलती रहे उसे पताका कहते हैं। जैसे- रामकथा में हनुमान, अंगद, सुग्रीव की कथाएँ

(ख) प्रकरी - वैसी प्रासांगिक कथाएं जो सिर्फ एक बार मुख्य कथा में योग देकर चली जाती है उसे प्रकरी कहते हैं। जैसे - रामकथा में - सबरी, केवट, मंथरा आदि की उपकथा

2) विषयवस्तु की दृष्टि से नाटकीय कथाएँ - तीन प्रकार की होती है

(i) प्रख्यात

(ii) उत्पाठ्य

(iii) मिश्र

(i) प्रख्यात - वैसी कथावस्तु जो इतिहास, पुराण या लोक प्रसिद्ध घटनाओं पर आधारित हो उसे प्रख्यात कथावस्तु कहते हैं।

(ii) उत्पाठ्य - वैसी कथावस्तु जो कल्पना पर आधारित हो । ऐसी कथा को लेखक अपनी कल्पना शक्ति से उत्पन्न करता है।

(ii) मिश्र - वैसी कथा जिसमें इतिहास और कल्पना दोनों का मिश्रण हो उसे मिश्र कथा कहते हैं

3) अभिनय की दृष्टि से नाटकीय कथावस्तु के दो भेद -

(i) दृश्य

(ii) सूच्य

(i) दृश्य - कथावस्तु के जिस हिस्से को हम परदे/ रंगमंच पर उतारते हैं, उसे दृश्य कहते हैं।

(ii) सूच्य - वैसी कथावस्तु जिसे हम देख नहीं पाते, केवल परदे के पीछे से उसकी सूचना दे दी जाती है इसे सूच्य कथावस्तु कहते हैं।

सूच्य कथावस्तु के भी पाँच उपभेद होते हैं -

(क) विषकम्भक

(ख) प्रवेशक

(ग) चूलिका

(घ) अंकास्य

(ड.) अंकावतार

(क) विषकम्भक - इसके अंतर्गत दो उच्चवर्ग के पात्र संस्कृत भाषा में सूचना देते हैं। ये पात्र नाटक के प्रारंभ, मध्य या अंत किसी भी समय आ सकते हैं ।

(ख) प्रवेशक - इसमें भी दो व्यक्ति होते हैं लेकिन ये दोनों निम्न वर्ग के होते हैं और ये प्राकृत या जनभाषा के माध्यम से सूचना देते हैं। यह नाटक के शुरू में नहीं बल्कि बीच-बीच में आकर सूचना दे सकता है।

(ग) चूलिका - वैसे पात्र जो पर्दे के पीछे से ही सूचना देता है, उसे चूलिका कहते हैं।

(घ) अंकास्य - जब कोई पात्र अभिनय करते हुए अंत में अगले अंक की सूचना देता है उसे अंकास्य कहते हैं।

(ड.) अंकावतार' - जब एक पात्र एक अंक के बाद दूसरे अंक में भी अभिनय करता है। अर्थात् एक पात्र जब बार-बार अभिनय करता है तो उसे ही अंकावतार कहते हैं ।

(4) संवाद की दृष्टि से नाटकीय कथावस्तु के तीन भेद होते हैं –

(i) सर्वश्राव्य

(ii) नियंत श्रव्य

(iii) अश्राव्य

(i) सर्वश्राव्य - जिस संवाद को सभी लोग सुन सकें उसे 'सर्वश्राव्य' संवाद कहते हैं।

(ii) नियंत श्राव्य - जिस संवाद को सभी नहीं बल्कि निर्धारित व्यक्ति ही सुन सकें उसे नियंत कहते हैं। स्वगत - कथन इसका श्राव्य उदाहरण है।

(iii) अश्राव्य - जिस संवाद को कोई नहीं सुन सके उसे अश्राव्य कहते हैं।

कथा-विन्यास

कथा विन्यास नाटक में शुरू से अंत तक चलती रहती है। कथा के व्यवस्थित ढंग को ही कथा विन्यास कहते हैं। कथा कहाँ से और कैसे शुरू और अंत होता है, इसके व्यवस्थित रूप को ही कथाविन्यास कहते हैं।

कथा विन्यास के तीन तत्व या अवस्थाएँ है

(क)अर्थप्रकृतियाँ

(ख) कार्य की अवस्था

(ग) संधियाँ

(क) अर्थ प्रकृतियाँ - अर्थप्रकृतियाँ वे साधन है जो कथा को फलागम की ओर अग्रसर करती है। इसके पाँच प्रकार होते हैं जिसको आगे चार्ट द्वारा दिखाया जाएगा।

(ख) कार्य की अवस्था - कथा विन्यास की इस अवस्था में फल की प्राप्ति के लिए कार्य किया जाता है। इसके भी पाँच प्रकार है।

(ग) संधियाँ - इसमें अर्थ प्रकृतियाँ और कार्य की अवस्था को मिलाया जाता है।

अर्थ प्रकृतियाँ	कार्य की अवस्था	संधियाँ
बीज	आरंभ	मुख
बिन्दु	प्रयत्न	प्रतिमुख
पताका	प्रत्याशा	गर्म
प्रकरी	निमताप्ति (नियत प्राप्ति)	विमर्श
कार्य	फलागमन	निर्वहन

कथा को प्रारंभ करने की अवस्था को ही वीज कहते हैं। जिस प्रकार किसान खेत में बीज -बोता है तब पौधा और फल प्राप्त होता है ठीक उसी प्रकार लेखक या नाटककार कथा को बीजावस्था से शुरू करता है तो वह कार्य अवस्था से आरंभ होता है जिसे मुख कहते हैं। नायक किसी बिन्दु से फल की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करते हैं। इसमें फल प्राप्ति के लिए प्रयास किया जाता है जिसे प्रतिमुख कहते हैं । पताका के अनुसार नायक लंबे समय तक संघर्ष करके फल प्राप्त करने की आशा में लगा रहता है। इसे ही गर्म (कथा की गर्भावस्था) कहते हैं। जब नायक अन्य लोगों से (प्रकरी) सहायता प्राप्त कर फल की प्राप्ति के नजदीक

पहुँच जाता है तब उसे यह अनुभव होने लगता है कि अब फल की प्राप्ति तय है। उसे विमर्श कहते हैं । जब नायक सभी कार्य को कर लेता है तब फल का आगमन होता है जिसे निर्वहण कहते हैं।

भारतीय नाटक और पाश्चात्य नाटक में अंतर -

भारतीय नाटक का अंत सुखान्त (Comedy - कामदी) होता है ।

- पाश्चात्य नाटक दुखांत (Aregoly - त्रासदी) होता है।

(ख) पात्र और चरित्र - चित्रण - कथावस्तु को आगे बढ़ाने के लिए ही पात्र होते हैं। पात्र कहानी को बदल भी सकता हैं या उसी में अपना जीवन बिता सकता है। जैसी कहानी होगी वैसा पात्र होगा और पात्र जैसा होगा कहानी वैसी होगी।

यह नाटक की प्रमुख विशेषता है।

नाटक को नाटक के तत्व प्रदान करने का श्रेय इसी को है।

यही नाट्यतत्व का वह गुण है जो दर्शक को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

इस संबंध में नाटककार को नाटकों के रूप , आकार , दृश्यों की सजावट और उसके उचित संतुलन , परिधान , व्यवस्था , प्रकाश व्यवस्था आदि का पूरा ध्यान रखना चाहिए। दूसरे शब्दों में लेखक की दृष्टि रंगशाला के विधि – विधानों की ओर विशेष रुप से होनी चाहिए इसी में नाटक की सफलता निहित है।

पात्र चार प्रकार के होते हैं –

(i) धीर ललित

(ii) धीर प्रशांत

(iii) धीरोद्धत

(iv) धीरोदात

(i) धीर ललित- ऐसा नायक कलाप्रेमी होता है। इसमें कला का सभी गुण पाया जाता है।

(ii)धीर प्रशांत - ऐसा नायक गंभीर स्वभाव का होता है। प्रशांत महासागर की तरह गंभीर और धैर्यवान होता है।यह काफी गंभीरता से सोच विचारकर कोई निर्णय लेता है।

(iii) धीरोद्धत - ऐसा पात्र क्रोधी और घमंडी होता हैं ।

(iv) धीरोदात - यह पात्र धैर्यवान ,उदावादी, त्यागी, सत्यनिष्ठ, होता है ।

(ग) संवाद / कथोपकथन - संवाद' या कथोपकथन नाटक का प्राण होता है । कथा विकास और पात्रों के चरित्र चित्रण का 'एकमात्र साधन संवाद या कथोपकथन तत्व ही है। इसके बिना नाटक संभव ही नहीं है। संवाद के माध्यम से, एक पात्र दूसरे पात्र से परस्पर बात करते हुए कथा का विकास करते हैं।

- नाटक में नाटकार के पास अपनी और से कहने का अवकाश नहीं रहता।
- वह संवादों द्वारा ही वस्तु का उद्घाटन तथा पात्रों के चरित्र का विकास करता है।
- अतः इसके संवाद सरल , सुबोध , स्वभाविक तथा पात्रअनुकूल होने चाहिए।
- गंभीर दार्शनिक विषयों से इसकी अनुभूति में बाधा होती है।
- इसलिए इनका प्रयोग नहीं करना चाहिए।

नीर सत्ता के निरावरण तथा पात्रों की मनोभावों की मनोकामना के लिए कभी-कभी स्वागत कथन तथा गीतों की योजना भी आवश्यक समझी गई है।

(घ) देशकाल/वातावरण - वे परिस्थितियाँ जिन परिस्थितिओ में नाटक लिखा जाता है उसे नाटक का देशकाल करते हैं। रंग संकेत, मंचसज्जा अथवा पात्रों की वेशभूषा और संवाद से देशकाल या वातावरण का निर्माण किया जाता है। देशकाल वातावरण के चित्रण में नाटककार को युग अनुरूप के प्रति विशेष सतर्क रहना आवश्यक होता है। पश्चिमी नाटक में देशकाल के अंतर्गत संकलनअत्र समय स्थान और कार्य की कुशलता का वर्णन किया जाता है। वस्तुतः यह तीनों तत्व ' यूनानी रंगमंच ' के अनुकूल थे। जहां रात भर चलने वाले लंबे नाटक होते थे और दृश्य परिवर्तन की योजना नहीं होती थी।

परंतु आज रंगमंच के विकास के कारण संकलन का महत्व समाप्त हो गया है।

भारतीय नाट्यशास्त्र में इसका उल्लेख ना होते हुए भी नाटक में स्वाभाविकता, औचित्य तथा सजीवता की प्रतिष्ठा के लिए देशकाल वातावरण का उचित ध्यान रखा जाता है। इसके अंतर्गत पात्रों की वेशभूषा तत्कालिक धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक परिस्थितियों में युग का विशेष स्थान है।

अतः नाटक के तत्वों में देशकाल वातावरण का अपना महत्व है।

(ड़) भाषा शैली - जिस भाषा शैली में नाटक लिखा जाता है उसे उस नाटक की भाषा शैली कहाँ जाता है । नाटक की भाषा शैली सरल, चिताकर्षक, प्रवाहमय, पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल होनी चाहिए । नाटक सर्वसाधारण की वस्तु है

अतः उसकी भाषा शैली सरल, स्पष्ट और सुबोध होनी चाहिए , जिससे नाटक में प्रभाविकता का समावेश हो सके तथा दर्शक को क्लिष्ट भाषा के कारण बौद्धिक श्रम ना करना पड़े अन्यथा रस की अनुभूति में बाधा पहुंचेगी।

अतः नाटक की भाषा सरल व स्पष्ट रूप में प्रवाहित होनी चाहिए।

नाटक की भाषा में उत्सुकता बनाए रखने की क्षमता होनी चाहिए | लेखक की भाषा ही भाषा शैली है।

(च) उद्येश्य - "यह तत्व नाटक मेरुदंड हैं। किसी भी नाटक का कुछ न कुछ उद्देश्य होता है। नाटक की सार्थकता ही उद्देश्य हैं। बिना उद्देश्य कोई नाटक नहीं लिखा जा सकता है। मानव मन को संतुष्ट और लोकमंगल करना नाटक का स्थायी उद्देश्य है ।

सामाजिक के हृदय में रक्त का संचार करना ही नाटक का उद्देश्य होता है। नाटक के अन्य तत्व इस उद्देश्य के साधन मात्र होते हैं। भारतीय दृष्टिकोण सदा आशावादी रहा है इसलिए संस्कृत के प्रायः सभी नाटक सुखांत रहे हैं। पश्चिम नाटककारों ने या साहित्यकारों ने साहित्य को जीवन की व्याख्या मानते हुए उसके प्रति यथार्थ दृष्टिकोण अपनाया है उसके प्रभाव से हमारे यहां भी कई नाटक दुखांत में लिखे गए हैं , किंतु सत्य है कि उदास पात्रों के दुखांत अंत से मन खिन्न हो जाता है।

नाट्य शिक्षण का उद्देश्य

नाटक शिक्षण का उद्देश्य -

1. विभिन्न जीवन दर्शनक का ज्ञान नाटक के माध्यम से ।

2. संवाद शिक्षा - समाज के अनेक आयु वर्ग, ज्ञानवर्ग के लोगों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार करना, बातचीत करना, सम्वाद करना यह सब नाटक शिक्षण के द्वारा ही सम्भव है । विद्यार्थियों में सम्वाद शैली का विकास होता है ।

3. अनुकरणशीलता - अनुकरण मानव समाज का स्वाभाविक गुण है। नाटक द्वारा अनुकरण की तृप्ति होती है । विद्यार्थी कलाकार संवाद बोलना अनुकरण के द्वारा सीखता है और प्रयोग करता है ।

4. वैयक्तिक स्वभाव का अध्ययन - नाटक शिक्षण द्वारा व्यक्ति स्वभाव का ज्ञान करना और अध्ययन करना आसान हो जाता है इससे सीखने की प्रक्रिया गतिशील हो जाती है।

5. विद्यार्थी को विभिन्न परिस्थितियों का ज्ञान हो जाएगा और उसे समाधान करने में आसानी होगी।

6. भावाभिव्यक्ति - नाटकमे शब्दक प्रयोग भाव के अनुसार होते हैं । नाटक में गति–यति, विराम, आरोह–अवरोह भाव के अनुकूल प्रस्तुत किए जाते हैं ।

7. स्वस्थ मनोरंजन - नाटक द्वारा विद्यार्थी को स्वस्थ मनोरंजन प्रदान किया जा सकता है।

8. विद्यार्थियों में अभिनय कला का विकास और निपुणता।

9. विद्यार्थियों में प्राचीन एवं आधुनिक संस्कृति के यथार्थ जीवन से परिचिति एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विकास ।

10. विद्यार्थियों में शब्द भंडार, सूक्ति भंडार संवाद लेखन और कथा के नाट्यकला कौशल में वृद्धि ।

11. विद्यार्थियों में निरीक्षण, कल्पनाशीलता, सृजनात्मकता, विवेचन तथा बोध क्षमता का विकास ।

नाटक शिक्षण विधि/प्रणाली (**Methods of teaching Play/Drama**)

1. अर्थकथन प्रणाली (Methods of telling the meaning)
2. विश्लेषण प्रणाली
3. व्याख्या प्रणाली
4. समीक्षा प्रणाली
5. रंगमंच अभिनय प्रणाली
6. कक्षाभिनय
7. संयुक्त प्रणाली

रंगमंचीय एंव अभिनेय प्रणाली - यह नाटय शिक्षण की सबसे महत्वपूर्ण प्रणाली है। जिसे मंच पर प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। यही इसका सबसे सार्थक एंव महत्वपूर्ण पक्ष भी है जो इसे अन्य विधाओं से अलग भी करता है। नाटक की सार्थकता तथा मौलिक अस्तित्व तो अभिनय में ही है। इससे यह स्पष्ट होता है कि नाटक-शिक्षक की सर्वोत्तम प्रणाली है रंगमंच पर उसका वास्तविक प्रदर्शन, प्रस्तुतीकरण में है। यही कारण है कि इस प्रणाली को 'रंगमंचीय एवं अभिनेय प्रणाली' भी कहते हैं। इस प्रणाली में छात्रों को वास्तविक अनुभव प्राप्त होता है। वे सक्रिय होकर कथोपकथन याद करते हैं, उच्चारण शुद्ध करते हैं, भावपूर्ण ढंग से बोलना सीखते तथा उसका अभ्यास करते हैं और इस प्रकार नाटक के संदेश को आत्मसात् भी करते हैं। किंतु, इस प्रणाली में सभी छात्रों को नाटक में भाग लेने का अवसर नहीं मिल पाता। साथ-साथ यह प्रणाली समय, श्रम एवं व्ययसाध्य है। इन दोषों के होते हुए भी यह प्रयोग अथवा रंगमंच-अभिनय-प्रणाली नाटक शिक्षण की सर्वोत्तम प्रणाली है।

कक्षाभिनय प्रणाली - कक्षाभिनय प्रणाली में शिक्षक के निर्देशन में छात्र विभिन्न पात्रों के रूप में कक्षा में अभिनय करते हैं। इसमें न तो रंगमंच का निर्माण होता है और न ही छात्रों को विभिन्न पात्रों के अनुरूप पोशाक ही पहनना पडता है। इसमें नाटक के विभिन्न पात्रों के रूप में कार्य करनेवाले छात्र वर्ग के सम्मुख अपने-अपने संवाद का भावपूर्ण ढंग से पाठ करते हैं। हाँ, गीत वगैरह का भावपूर्ण ढंग से पाठ भर कर दिया जाता, उसका गायन नहीं होता। कक्षा-अभ्यास-प्रणामी में वाद्य यंत्रों का भी प्रयोग नहीं किया जाता है। इस प्रणाली से शिक्षण में रंगमंच-प्रणाली के सभी गुण तो नहीं हैं, किंतु बहुत अंशों में यह उसके निकट है। इतना ही नहीं, इसमें समय, धन तथा श्रम तीनों की बचत होती है। उद्देश्यों की प्राप्ति में यह प्रणाली अत्यधिक कारगर है। इसमें छात्र में क्रियाशीलता, मनोरंजन तथा विषय का स्पष्टीकरण प्रत्यक्ष रूप से हो जाता है। यह प्रणाली प्रस्तुत स्थिति में सर्वाधिक उपयोगी तथा सफल है।

नाट्य कला की भारतीय अवधारणा

नाट्यकला का विकास सर्वप्रथम भारत में ही हुआ। ऋग्वेद के कतिपय सूत्रों में यम और यमी, पुरुरवा और उर्वशी आदि के कुछ संवाद हैं। इन संवादों में लोग नाटक के विकास का चिह्न पाते हैं। अनुमान किया जाता है कि इन्हीं संवादों से प्रेरणा ग्रहण कर लोगों ने नाटक की रचना की और नाट्यकला का विकास हुआ। यथासमय भरतमुनि ने उसे शास्त्रीय रूप दिया। भरत मुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में नाटकों के विकास की प्रक्रिया को इस प्रकार व्यक्त किया है:

नाट्यकला की उत्पत्ति दैवी है, अर्थात् दु:खरहित सत्ययुग बीत जाने पर त्रेतायुग के आरंभ में देवताओं ने स्रष्टा ब्रह्मा से मनोरंजन का कोई ऐसा साधन उत्पन्न करने की प्रार्थना की जिससे देवता लोग अपना दु:ख भूल सकें और आनंद प्राप्त कर सकें। फलत: उन्होंने ऋग्वेद से कथोपकथन, सामवेद से गायन, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस लेकर, नाटक का निर्माण किया। विश्वकर्मा ने रंगमंच बनाया आदि आदि।

नाटकों का विकास चाहे जिस प्रकार हुआ हो, संस्कृत साहित्य में नाट्य ग्रंथ और तत्संबंधी अनेक शास्त्रीय ग्रंथ लिखे गए और साहित्य में नाटक लिखने की परिपाटी संस्कृत आदि से होती हुई हिंदी को भी प्राप्त हुई। संस्कृत नाटक उत्कृष्ट कोटि के हैं और वे अधिकतर अभिनय करने के उद्देश्य से लिखे जाते थे। अभिनीत भी होते थे, बल्कि नाट्यकला प्राचीन भारतीयों के जीवन का अभिन्न अंग थी, ऐसा संस्कृत तथा पालि ग्रंथों के अन्वेषण से ज्ञात होता

है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र से तो ऐसा ज्ञात होता है कि नागरिक जीवन के इस अंग पर राज्य को नियंत्रण करने की आवश्यकता पड़ गई थी। उसमें नाट्यगृह का एक प्राचीन वर्णन प्राप्त होता है। अग्निपुराण, शिल्परत्न, काव्यमीमांसा तथा संगीतमार्तंड में भी राजप्रसाद के नाट्यमंडपों के विवरण प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार महाभारत में रंगशाला का उल्लेख है और हरिवंश पुराण तथा रामायण में नाटक खेले जाने का वर्णन है।

इतना सब होते हुए भी यह निश्चित रूप से पता नहीं लगता कि वे नाटक किस प्रकार के नाट्यमंडपों में खेले जाते थे तथा उन मंडपों के क्या रूप थे। अभी तक की खोज के फलस्वरूप सीतावंगा गुफा को छोड़कर कोई ऐसा गृह नहीं मिला जिसे साधिकार नाट्यमंडप कहा जा सके।

पाश्चात्य विद्वानों की भी धारणा है कि धार्मिक कृत्यों से ही नाटकों का प्रादुर्भाव हुआ। इससे रंगस्थली (यदि वास्तव में उसे रंगस्थली की संज्ञा दी जा सके) के प्रारंभिक स्वरूप की कल्पना की जा सकती है कि वह वृत्ताकर रही होगी। धीरे-धीरे जब दर्शनीयता की ओर अधिक ध्यान दिया गया होगा, तब यह अनुभव किया गया होगा कि इस वृत्ताकार रंगस्थली में केवल आगे के कुछ दर्शक की दृश्य का पूरा आनंद उठा सकते हैं, पीछे बैठनेवालों को सिर उठाने की आवश्यकता होती है। इस दृष्टि से कटोरानुमा स्थान रंगस्थली के लिए अधिक उपयुक्त समझा जाने लगा होगा। धार्मिक कृत्यों और नृत्य आदि के लिए यह उत्तम प्रबंध था। धीरे-धीरे जब नाटकों का रूप अधिक विकसित हुआ, तब यह अनुभव हुआ होगा कि कथाकार और अभिनेताओं के सामने की ओर बैठनेवालों को ही देखने और सुनने की अच्छी सुविधा होती है। इसके लिए पर्वतीय स्थानों में घाटी बहुत उपयुक्त प्रतीत हुई होगी, जिसमें ढाल पर बैठे दर्शक नीचे अभिनेताओं को भली भाँति देख सुन सकते थे और उनके पीछे फैला हुआ विस्तृत भूखंड सहज सुंदर चित्रित प्राकृतिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत करता था। शायद इसी का अनुकरण अपर्वतीय पृष्ठभूमि प्रस्तुत करता था। शायद इसी का अनुकरण अपर्वतीय स्थानों में कृत्रिम रंगशालाएँ बनाकर किया गया, जिनमें वृत्ताकार दीवार के अंदर सीढ़ीनुमा स्थान दर्शकों के बैठने के लिए होता था, जो भीतर बने ऊँचे चबूतरे को तीन ओर से घेरे रहता था। चौथी ओर सीधी दीवार होती थी, जिसमें सुंदर चित्रकारी होती थी। इसके पीछे नेपथ्य होता था। जहाँ अभिनेताओं के उठने बैठने और उनकी रूपसज्जा का प्रबंध रहता था। उपर्युक्त चिरप्रतिष्ठित रंगशाला के प्राचीन रूपों में धीरे-धीरे सुधार होता गया। कालांतर में प्रेक्षास्थान तीन ओर के बजाय केवल एक ओर, सामने ही सामने रह गया। सारा विन्यास गोल से बदलकर चौकोर हो गया और नाट्यशाला का आधा, या इससे भी अधिक स्थान घेरने लगा।

नाट्य कला की पश्चात्य अवधारणा

यूनान और रोम की प्राचीन सभ्यता में हम चौथी शती ई. पूर्व में रंगमंच होने की कल्पना कर सकते हैं। इतिहास प्रसिद्ध डायोनीसन का थिएटर एथेंस में आज भी उस काल की याद दिलाता है। एक अन्य थिएटर एपिडारस में है, जिसका नृत्यमंच गोल है। 364 ई. पूर्व रोमवाले इट्रस्कन अभिनेताओं की एक मंडली अपने नगर में लाए और उनके लिए 'सर्कस मैक्सियस' में पहला रोमन रंगमंच तैयार किया। इससे कल्पना की जाती है कि इट्रूरियावालों से ही (जिनका उद्गम विवादग्रस्त है) नाट्यकला और फलत: रंगमंच का प्रारंभिक रूप रोम में आया। सीज़र (कैसर) आगस्टस (दूसरी शती ई.पू.) ने रोम को बहुत उन्नत किया। पांपेई का शानदार थिएटर तथा एक अन्य (पत्थर का) थिएटर उसी के बनवाए बताए जाते हैं।

प्रमुख चरण:

१. रोमीय परंपरावाला विसेंजा रंगमंच (1580-85 ई.), जिसमें बाद के दीवार के पीछे वीथिकाएँ जोड़ दी गई थीं;

२. सैवियोनेटा में स्कमोज़ी ने इन वीथिकाओं को मुख्य रंगमंच से मिला दिया (1588 ई.);

३. इमिगो जोंस ने बाद में इन्हें रंगमंच ही बना दिया तथा

४. आगे चलकर (1618-19 ई.), परमा थियेटर में, रंगमंच पीछे हो गया और पृष्ठभूमि की चित्रित दीवार आगे आ गई।

लगभग दूसरी शती ईसवी में रंगमंच कामदेव का स्थान माना जाने लगा। ईसाइयत के जन्म लेते ही पादरियों ने नाट्यकला को ही हेय मान लिया। गिरजाघर ने थिएटर का ऐसा गला घोटा कि वह आठ शताब्दियों तक न पनप सका। कुछ उत्साही पादरियों ने तो यहाँ तक फतवा दिया कि रोमन साम्राज्य के पतन का कारण थिएटर ही है। रोमन रंगमंच का अंतिम सन्दर्भ 533 ई. का मिलता है। किंतु धर्म जनसामान्य की आनंद मनाने की भावना को न दबा सका और लोकनृत्य तथा लोकनाट्य, छिपे छिपे ही सही, पनपते रहे। जब ईसाइयों ने इतर जातियों पर आधिपत्य कर लिया, तो एक मध्यम मार्ग अपनाना पड़ा। रीति रिवाजों में फिर से इस कला का प्रवेश हुआ। बहुत दिनों तक गिरजाघर ही नाट्यशाला का काम देता रहा और वेदी ही रंगमंच बनी। 10 वीं से 13 वीं शताब्दी तक बाइबिल की कथाएँ ही प्रमुखत: अभिनय का आधार बनीं, फिर धीरे-धीरे अन्य कथाएँ भी आईं, किंतु ये नाटक स्वतंत्र ही रहे। चिर प्रतिष्ठित रंगमंच, जो यूरोप भर में जगह जगह टूटे फूटे पड़े थे, फिर न अपनाए गए।

इतालवी पुनर्जागरण के साथ वर्तमान रंगमंच का जन्म हुआ, किंतु उस समय जहाँ सारे यूरोप में अन्य सभी कलाओं का पुनरुद्धार हुआ, रंगमंच का पुन: अपना शैशव देखना पड़ा। 14 वीं शताब्दी में फिर से नाट्यकला का जन्म हुआ और लगभग 16 वीं शताब्दी में उसे प्रौढ़ता प्राप्त हुई। शाही महलों की अत्यंत सजी धजी नृत्यशालाएँ नाटकीय रंगमंच में परिणत हो गईं। बाद में उद्यानों में भी रंगशालाएँ बनीं, जिनमें अनेक दीवारों के स्थान पर वृक्षावली या झाड़बंदी ही हुआ करती थी।

रंगमंच का विकास विसेंजा और परमा में बनी हुई रंगशालाओं से स्पष्ट परिलक्षित होता है। विसेंजा की ओलिंपियन अकादमी में एक सुंदर रंगशाला सन् 1580-85 में बनी, जिसपर छत भी थी। इसमें पीछे की ओर वीथिकाओं जैसे अनेक कक्ष बढ़ाए गए। सन् 1588 में सैवियोनेटा में स्कमोज़ी ने इन कक्षों को मुख्य रंगमंच से मिला दिया और धीरे-धीरे बाद में वे भी रंगमंच ही हो गए। आगे चलकर सन् 1618-19 में परमा थिएटर में समूचा रंगमंच ही पीछे कर दिया गया और पृष्ठभूमि की चित्रित दीवार आगे आ गई, जिसपर बीच में बने एक बड़े द्वार से ही नाटक देखा जा सकता है। इस द्वार पर पर्दा लगाया जाने लगा। पर्दा उठने पर दृश्य किसी फ्रेम में जड़ी तस्वीर जैसा दिखाई पड़ता है। रंगमंच में भी दृश्यों के अनुकूल प्रभाव उत्पन्न करने के लिए अनेक पर्दे लगाए जाने लगे। मिलन का 'ला स्काला' ऑपेरा हाउस 18 वीं - 19 वीं शती में रंगमंच के विकास का आदर्श माना जाता है। इसमें पखवाइयाँ लगाने के लिए बगलों में स्थान बने हैं।

पुनर्जागरण सारे यूरोप में फैलता हुआ एलिज़बेथ काल में इंग्लैंड पहुँचा। सन् 1574 तक वहाँ एक भी थिएटर न था। लगभग ५० वर्ष में ही वहाँ रंगमंच स्थापित होकर चरम विकास को प्राप्त हुआ। इस कला की प्रगति की ज्योति इटली से फ्रांस, स्पेन और वहाँ से इंग्लैंड पहुँची। रानी एलिज़वेथ को आर्डबर और तड़क भड़क से प्रेम था। इससे रंगमंच को भी प्रोत्साहन मिला। 1590 से 1620 ई. तक शेक्सपियर का बोलबाला रहा। रंगमंच विशिष्ट वर्ग का ही नहीं, जनसामान्य के मनोरंजन का साधन बना। किंतु प्रोटेस्टैट संप्रदाय द्वारा इसका विरोध भी हुआ और फलस्वरूप 1642ई. में नाट्य कला पर रोक लग गई। धीरे-धीरे दरबारियों और जनता का आग्रह प्रबल हुआ और रोक हटानी पड़ी। मार्लो, शेक्सपियर तथा जॉनसन आदि के विश्वविश्रुत नाटक पुन: प्रकाश में आए। ग्लोब थिएटर एलिज़बेथ

कालीन रंगमंच का प्रतिनिधि है। इसमें पुरानी धर्मशालाओं का स्वरूप परिलक्षित होता है, जहाँ पहले नाटक खेले जाते थे। प्रांगण के बीच में रंगमंच होता था और चारों ओर तथा छज्जों में दर्शकों के बैठने का स्थान रहता था।

जब सारे यूरोप के रंगमंच लोकतंत्र की ओर अग्रसर हो रहे थे, संयुक्त राज्य, अमरीका, में अपनी ही किस्म के जीवन का स्वतंत्र विकास हो रहा था। चार्ल्सटन, फिलाडेल्फ़िया, न्यूयॉर्क और बोस्टन के रंगमंचों पर लंदन का प्रभाव बिलकुल नहीं पड़ा। फिर भी अमरीकी रंगमंचों में कोई उल्लेखनीय विशेषता नहीं थीं। उनके सामान्य रंगमंच घुमंतू कंपनियों के से ही होते थे। किंतु 18 वीं शती के अंत तक अनेक उत्कृष्ट काटि के भिएटर बन गए, जिनमें फ़िलाडेल्फ़िया का चेस्टनट स्ट्रीट थिएटर (1794ई.) और न्यूयॉर्क का पार्क थिएटर (1798ई.) उल्लेखनीय हैं। इनमें सुंदर प्रेक्षागृह बने और कुछ यूरोपीय प्रभाव भी आ गया। तदनंतर 20-25 वर्ष में ही अमेरिकी रंगमंच यूरोपीय रंगमंच के समकक्ष, बल्कि उससे भी उत्कृष्ट हो गया।

साहित्य की अन्य विधाओं में नाटक एक महत्त्वपूर्ण विधा है। जिसके माध्यम से न सिर्फ साहित्यिक अभिक्षमता का विकास होता है, बल्कि इस एक विधा से अन्याय विधाओं जैसे कविता, कहानी का कल्पना लोक भी जुडता है। नाटक की विषय-वस्तु जहाँ एक तरफ कहानी बुनने की कला में पारंगत करती है। वहीं संवादों की अदायगी में एक लय का समावेश, तथा भावातिरेक में संवादों का बोलना उसे कविता की पाद्यात्मकता के समीप ले जाता है।

नाटक एक सामूहिक प्रस्तुति है। नाटक की इसी संरचना के माध्यम से एक तरफ छात्र इस दृश्यात्मक विधा से स्वयं अपने को जोड कर देखने के साथ ही अन्य विषयों की एकरसता को भी तोडने में सफल होगा। साथ ही सहृदय की सामूहिक अवधारणा में वह एक दर्शक के रूप में साथ के लोगों की प्रतिक्रिया से अवगत होगा। जिससे उसे अपना आकलन करने में आसानी होगी। जिससे विषय के ज्ञान के साथ-साथ व्यवहारिकता का बोध सहज सरल रूप में आसानी से क्रियांवित हो सकेगा है। शरीर के सभी अंगों का संचालन, संवाद बोलने में सहजता होगी। जो व्यक्तित्व के विकास के साथ ही अभिव्यक्ति कौशल और आत्मविश्वास को बढायेगा है। जिससे समाज, परिवेश और स्वयं अभिनेता के संस्कारों का नया स्वरूप बनता है। अन्य साहित्येतर विषयों के साथ जुड कर नाट्य शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य इस प्रकार सामने आते हैं –

(i) मौखिक वाचन और लेखनशक्ति का विकास

(ii) भावनाओं का उद्दात्तीकरण और उनका व्यक्तित्व निर्माण में सहयोग

(iii) विवेक सम्पन्नता और भावनात्मक अभिव्यक्ति को सही दिशा और दृष्टि प्रदान करना

(iv) नाटक की अभिनेयता से जुडकर साहित्य की अन्य विधाओं से ज्ञान अर्जित करना

(v) जीवन जगत तथा साहित्य के प्रति नवीन सौन्दर्यानुभूति प्रदान करना

(vi) नैतिक मूल्यों के विस्तार से वैश्विक मूल्यों का निर्माण करना

(vii) जीवन दर्शन के प्रति तार्किक विकास करना

(viii) पारम्परिक संस्कार तथा संस्कृति दर्शन इतिहास समाज शास्त्र से नई पीढी को अवगत कराना तथा उनके बीच उदार दृष्टि का विकास करना

(ix) साहित्यिक विकास के पठन-पाठन से भाषा के विविध रूपों तथा उच्चारण कौशल से परिचित करवाना

(x) रचनात्मक एवं सृजनात्मक प्रतिभा को पहचानना और उसका विकास करना

(xi) कल्पना लोक को तर्क संगत आधार पर रूपाकार करने की क्षमता का विकास करना

(xii) सामूहिक, सामाजिक संबंधों से स्वयं को जोड कर देखने की दृष्टि का विकास

कक्षा में नाटक शिक्षण हेतु प्रयुक्त सोपान :

निम्नलिखित सोपान स्वीकार किया जा सकता है—

पूर्वज्ञान परीक्षण

1. प्रस्तावना

उद्देश्य कथन

वाचन, आदर्श वाचन, अनुकरण वाचन

2. विषय प्रवेश **व्याख्या–वाचन, मौन वाचन**

विचार–विश्लेषण

3. कक्षा कार्य निरीक्षण

4. आवृत्ति

5. गृहकार्य

विषय प्रवेश

वाचन व्याख्या विचार–विश्लेषण

- **प्रत्यक्ष वर्णन**
- **प्रतिमूर्ति द्वारा**
- **रेखा चित्र द्वारा**
- **चित्र द्वारा**
- **अंग संचालन**
- **वाक्य प्रयोग**
- **पर्यायवाची**
- **अनुवाद करना**
- **प्रसंग कथन द्वारा**
- **शब्द व्युत्पत्ति द्वारा**
- **शब्द विग्रह**

उपसर्ग द्वारा प्रत्यय द्वारा संधि द्वारा समास द्वारा

विचार–विश्लेषण या बोधात्मक प्रश्न - शिक्षण का प्रभावकारी माध्यम – मनौवैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि श्रव्य-दृश्य माध्यम के शिक्षण को सर्वोत्तम रूप से प्रभावकारी बनाया जा सकता है। नाटक एक जीवंत श्रव्य-दृश्य उपादान है। इस महत्त्व को आधुनिक शिक्षा शास्त्रियों ने भी स्वीकार किया है।

वर्तमान शिक्षण-कार्यों में इसके प्रयोग ने संभावनाओं के नये द्वार भी खोलें है। इसकी महत्ता इसी से सिदध हो जाती है कि अब सभी विषयों को नाटक के माध्यम से पढाया जा सकता है। जो थोडी-बहुत परेशानी तकनीकी उपकरणों की वजह से होती है उसे जल्द दूर किया जाये। इस दिशा में निरंतर प्रयास भी किये जा रहें हैं। आचरण तथा व्यवहार की शिक्षा नाटक के माध्यम से सर्वोत्तम ढंग से दी जा सकती है। मिथक, पुराण और इतिहास की शिक्षा तो नाटक के माध्यम से जीवंत तथा साकार हो जाती है। दूरदर्शन पर तो इस तरह के प्रयोग को आत्मसात करके बहुत समय से दूरस्थ-शिक्षा का पाठयक्रम चला करके दूर- दराज के क्षेत्रों को इससे जोडने का अभियान चल रहा है। इस दिशा में भारतेंदु, प्रसाद, और हरिकृष्ण प्रेमी, मोहन राकेश, लक्ष्मी नारायण, गिरीश कर्नाड, साहनी तथा सुरेन्द्र वर्मा के अतिरिक्त अन्य नाट्ककारों की एक लम्बी फेहरिस्त है जिनके नाटकों का यथा स्थान प्रयोग किया जा सकता है।

प्रशिक्षण एंव समाधान - ऐसे प्रशिक्षकों की नियुक्ति जो कि नाटक की बारिकियों के साथ उनके शिक्षण में भी सिद्ध - हस्त हो।

- प्रत्येक कॉलेज व विश्वविदयालय में रंगमंचीय आवश्यकताओं के अनुसार मंच की व्यवस्था।

- सीखनें की प्रक्रिया का धैर्य व विश्वास अर्जन।

- रंगमंचीय उपकरणों और वेशभूषा, परिधान व प्रकाश- योजना की समुचित व्यवस्था।

- लोक कलाओं एंव मानवीय अभिरूचियों को समंवित करने की कला का उचित प्रशिक्षण।

- अब तक के नाट्य प्रयोगों का सम्यक ज्ञान व जानकारी।

- इस कार्य को एक अभियान बनाने के लिए यह जरूरी है कि इस विधा को पढने-पढानेंवालों को प्रशिक्षित करनें के लिए समय-समय पर कार्यशाला आयोजित की जाय।

- कक्षा में दृश्यों को दिखानें के लिए प्रयुक्त तकनीकी उपकरणों को चालानें की व्यवस्था के लिए विदयार्थी तथा अध्यापक को उचित प्रशिक्षण मिले।

'थियेटर पेडागॉजी यानी नाट्य शिक्षण से अंतर्विषयक अनुशासन पढ़ने में मदद सकती है । नाटक एक प्रदर्शनकारी कला विधा है। आज शिक्षामें कला समेकित अधिगम की बात एनसीईआरटी के दस्तावेजों में कही गयी है । कला के विभिन्न माध्यम शिक्षण को प्रभावकारी बनाते हैं । नाटकीयता से अधिगम विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान आदि को भी सरलतापूर्वकपढाया जा सकता है। नाटक भाषा शिक्षण में सबसे ज्यादा प्रभावकारी और चुनौतीपूर्ण है।

वर्तमान परिदृश्य में नाटक को आधुनिक सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक कोटि में बांधना पर्याप्त नहीं है। विषय-वस्तु की दृष्टि से मैथिली नाटक को ऐतिहासिक पौराणिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक आदि भेद किया गया है । समस्या प्रधान नाटक का चलन भी मौजूद है।

आधुनिक नाटकों के चार भेद स्वीकृत किए गए हैं —

- ♦ गीतिनाट्य
- ♦ रेडियो नाटक
- ♦ दूरदर्शन नाटक
- ♦ एकांकी नाटक

इस नाटय कार्यशाला का उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास है ताकि उन्हें कक्षा कक्ष से लेकर उच्चारण, अभिनय, वाचन, आंगिक भाषा और अध्यापन शैली का सम्पूर्ण विकास करना है।

उद्देश्य -

1. विभिन्न जीवन दर्शन का ज्ञान नाटक के माध्यम से।
2. संवाद शिक्षा : समाज के अनेक आयु वर्ग, ज्ञानवर्ग के संग किसी प्रकार के व्यवहार करना, संवाद शैली के विकास से अपनी बात रखने में दक्षता।
3. अनुकरणशीलता : अनुकरण मानव समाजक स्वाभाविक गुण है । नाटक द्वारा अनुकरण की तृप्ति होती है । छात्र कलाकार संवाद अनुकरण द्वारा सीखेंगे और प्रयोग करेंगे।
4. वैयक्तिक स्वभाव का अध्ययन : नाटक शिक्षण द्वारा व्यक्ति स्वभाव का ज्ञान करना अध्ययन करना और सीखना आसान होगा।
5. विद्यार्थी को विभिन्न परिस्थिति का ज्ञान होगा और उसका समाधान करना सीख सकते हैं।
6. भावाभिव्यक्ति : नाटकमें शब्द प्रयोग भाव के अनुसार होता है। नाटकमें गति-यति, विराम, आरोह-अवरोह भाव के अनुकूल प्रस्तुत किया जाता है ।
7. स्वस्थ मनोरंजन : नाटक द्वारा विद्यार्थी को स्वस्थ मनोरंजन प्रदान किया जाता है ।
8. विद्यार्थीमे अभिनय कला विकसित होता है और निपुणता आती है।
9. विद्यार्थी प्राचीन एवं आधुनिक संस्कृति के यथार्थ जीवन से परिचित होते हैं ।
10. विद्यार्थीशब्द भंडार, सूक्ति भंडार संवाद लेखन और कथा के नाट्यकला कौशल में वृद्धि होती है ।
11. विद्यार्थी के निरीक्षण, कल्पनाशीलता, सृजनात्मकता, विवेचन तथा बोध क्षमताक विकास ।

Theater workshop : phase I

Activity I date 28.05.2022 – 06.06.2022

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान , भोपाल के सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए नाट्य कार्यशाला और प्रदर्शन के तहत नाट्य प्रस्तुति 'आद्य-नायिका' का मंचन दिनांक 6 जून 2022 को पी.एस.एस.सी.आई.वी.आई के निनाद सभागार श्यामला हिल्स भोपाल में किया जा रहा है । नाटक 'आद्य नायिका' का लेखन डॉ.अरुणाभ सौरभ ने और निर्देशन श्री निलेश दीपक ने किया है। प्रस्तुति बी.एस.सी बी.एड छठे सेमेस्टर के क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के विद्यार्थियों की रही और जिसे हिंदी रंगभूमि नई दिल्ली के सहयोग से किया गया।
नाटक में इतिहास, मिथक और हमारा समय तीनों को एक साथ प्रस्तुत करके रचनात्मक आयाम दिया गया है । दीदारगंज की यक्षिणी सौ साल बाद पुन : एक नई भाव - भंगिमा और अर्थ - छवि के साथ हमारे सामने आती है । जहाँ एक ओर प्राचीन गणतंत्र और नगरों, उनके बीच के आपसी वैमनस्य , उनकी दुरभिसंधियों और षडयंत्रों के साथ - साथ ज्ञान , विज्ञान और कला की प्राचीन उपलब्धियों को यथाप्रसंग उपस्थित करती है , वहीं एक स्त्री के स्त्रीत्व की तलाश है , जिनमें अथाह शक्तियाँ हैं । यह नाटक नए प्रतीकार्थ रचने के सामर्थ्य को दर्शाता है । इसमें वैभवशाली मगध और अखण्ड भारत की राजधानी पाटलिपुत्र के उत्थान और पतन की पड़ताल । आद्य नायिका ' यक्षिणी ' के सहारे देवलोक , गंधर्वलोक से लेकर मृत्युलोक तक पसरी उस पितृसत्तात्मक संरचना को भी प्रश्नांकित करता है जिसमें स्त्रियों का सदा से ही शोषण किया जाता रहा है । यहाँ इस बात को दोहराया गया है कि , स्त्री के बिना वह चाहे देव पुरुष हो या गंधर्व या इस धरती का सामान्य पुरुष, किसी के अस्तित्व की कल्पना संभव नहीं । 'प्रकृति' और 'पुरुष' के संयोग से सृष्टि के निर्माण की संभावना की बात भारतीय दर्शन करता है । नाटक के प्रदर्शन से शिक्षाशास्त्रीय विविध अवयवों को समझना आसान हो जाता है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में यह प्रस्तुति प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति को रूपायित करती है और पौराणिक शास्त्रीय और लोक कलाओं का समायोजन भी।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में यह नाटक दस दिवसीय कार्यशाला में तैयार किया गया। इस नाट्य कार्यशाला में रंगमंच के तमाम बारीकियों मसलन अभिनय, संगीत, मंच परिकल्पना और नृत्य आदि तमाम अवयवों पर प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला का निर्देशन नीलेश दीपक ने किया। कार्यशाला में संगीत प्रशिक्षक लखन लाल अहरिवार, नृत्य प्रशिक्षक आस्था परिभाषा और मंच पार्श्व के लिए धीरज शहंशाह, श्याम, पूजा, वैभवी आदि शामिल थे। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. अरुणाभ सौरभ, डॉ. सुरेश मकवाणा, विस्तार शिक्षा के अध्यक्ष प्रोफेसर प्रवीण कुलश्रेष्ठ तथा प्राचार्य प्रोफेसर जयदीप मंडल के साथ साथ क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के सभी संकाय सदस्यों की उपस्थिति महत्वपूर्ण रही

DAY WISE THEATRE REPORT

Day 1 Play: Aadhyanayika

28 May 2022 Author: Dr. Arunabh Saurabh

Saturday

All the students were asked to report at the Auditorium at 9:00 am sharp. Once everyone assembled at auditorium, the theater team introduced themselves. A before formal beginning of the workshop the script was shared.

All of us were asked to assemble on stage and make a big circle. There were 43 of us. Most of the students who have interacted before knew each other but there were many who did not even know each other's names. The first activity conducted was to increase familiarity among the participants. First we were all made to say our names loud and clearly for everyone to listen. And then we played the memory game in which player 1 says their name followed by player 2 saying the name of previous player and then their own. After that player 3 has to take both the previous name before saying their name and so on. With this game we learned each other's name and got little more comfortable with each other.

Another game we played after that was a name game. The players were required to take name of one player and run to them and the player towards whom the previous player run is required to take another name and run to them. The aim of this game was to make everyone comfortable with each

other and learn each other's name. The first half of the day was spent in games and learning each other's name.

After the games, we were asked to take the centre and present something in front of everyone. Some of the kids and sang, some danced, some acted, some even recited poetries. After this activity we were given lunch break.

After the lunch break we all get done stage and sat on a circle for the script reading. The script was shared a day before in the Theater Whatsapp group and was available to everyone. Students one by one after the director stood at the place and took turns reading the script loudly for everyone to listen and read along. After the script reading session, the student body was divided into four groups with 10 to 12 participants each. All the groups were given the time of 20 minutes and asked to enact the play as per our understanding of it. Each group huddled at corners of the auditorium and came with something. After 20 minutes each group took the stage and presented their respective performances. With these performance director sir was able to assess children's understanding of the play. It also helped them develop their vision. Inputs from everyone was welcome as the script is original and we were to put very first performance of this play. The common thing observed by the students and directors were the inclusion of the scene of "Suggi" and its acceptance and excitement revolving around this character. This activity helped that team of director and instructor to understand the level of understanding of students of the play with this activity the students also got to understand the play but not very clearly. Being the students of science, the lack of familiarity of Hindi and knowledge of history, it was only natural for us to not understand the play very clearly.

With this the first day of the workshop came to an end.

Day 02

29 May, 2022, Sunday

After the warm up exercises of 15 minutes, all of us were asked to walk around in no fixed path or manner. We were to cover the whole space of the stage stepping around randomly without bumping into anyone. Initially everyone was instructed to walk in a slow pace. We instructed to increase our pace with clap given by sir with 1 clap being slowest and 10th clap being an instruction to run.

During the script reading session we had a discussion about the statue that is being pictureized in the play. One of the students presented an and idea of how the statue might have discovered by group of fisherman or washer man accidentally and they would have imagine her be a goddess.

Neelesh sir welcomed the idea and asked us to give our valuable suggestions to it.

In the original poetry Aadyanayika the poetry is being told and imagined by a poet but for the dramatic presentation the poet has been changed to an artist. The first scene we started practicing on stage was that of the artist in which the he walks into the frame and starts imagining and trying to paint a picture. Director sir gave his input to add dramatic appeal and fill life into the character of the painter.

While the painter scene took place on the stage the rest of the characters practiced their dialogues and tried to learn them on their own. The music pit joined their teachers at the back and started with the songs composition.

After that the stage was taken over by the dancing team to practice Ganesh Vandana and the rest of the students were given tea teak.

After the short tea break all of us joined our respective teams and started where we left off. After the lunch break at 1 we joined our teams and practiced until the tea break at 4. And after tea break we played some games and practiced the scenes we learned in the morning.
Before leaving we all sat in a circle on stage and Neelesh sir gave us few tips and talked with all of us. He

informed us how he'll be finalizing the cast tomorrow and the promised the play will start taking the envisioned shape soon

Day 03

30 May, 2022, Monday

After the warm up exercises and short water break following that, Priyanshi Khatri one of the students of BSc BEd Bio gave a brief presentation on the topic of Yakshini. We learnt that Yaksha and Yakshini are mythical creatures who are Gods of jewels and money and goddess of fertility. We all had a discussion about the famous statue of Deedarganj Yakshini on whom Aadhyanayika is picturized. After the discussion we all were given a task to walk around the stage very slowly and increase our pace when the instructor claps. As we kept increasing our pace without bumping into each other furthermore we were instructed to strike a classical pose at the sound of whistle. We did that thrice and after that we were asked to pretend as if we're on a busy road and on the sound of whistle we are to strike a pose of a busy human road. We did that exercise couple of times running around the stage. After that we were asked to sit and stand and run on the sound of whistle. We did these excises to increase our ease of mobility. After these exercises we all laid down on the stage and rested for few minutes. After the rest we were made to sit comfortably and take a deep breadth and speak om thrice while pushing the air out of our system.

After that all the students were given their respective tasks. The students who liked singing joined the music pit, the dancers and those who were interested in dancing joined the dance team and rest of the students stayed back for acting. We all formed a little circle and the roles were assigned to the students who seemed to be fitting. The work on the play began as soon as the casting was done. The music pit joined their teacher Lakhan sir and Samriddhi ma'am at the back of the stage. The dancing team was led by Aastha ma'am in front of the stage and they started with the stretching exercises first and then moved on to Ganesh Vandana which is to be performed at the beginning of any act. The actors gathered in front of the stage and weighted for their names to be called. We were given a short tea break at 11:90. Neelesh sir assigned every group of actors their scenes which they were asked to study and understand. The construction of the play began from the begging. Sir called upon stage few students who were to act out the first scene while rest of the actors read and tried to understand the play. Sir took each group one by one calling them on stage and started teaching them the words and the ways they had to use for their characters. The whole first spend in doing this and after that we were given lunch break.

After lunch break we all gathered on stage and had a lose discussion regarding the script and the plot. Despite of being students and learners, director sir welcomed our suggestions. All of us took part in the discussion. And after that the respective groups left for the respective practices. The music pit started working on music and the dancers started learning the dance routines. For the actors the things were not as simple. We started with reading and re reading the script and dialogues. The different groups took turn taking the stage and sir worked on their presence and dialogues. At 4 we were given a tea break and after tea break we joined our respective places. Since it was pure Hindi and the words used were not common in our daily language, we took time working on pronunciation.

As the session came to an end and we left for our respective hostels, everyone had this one question common: Do we even understand what we're doing?

And to this question we had a common answer as well: No.

Before leaving we were instructed to take plenty of rest and stay hydrated.

Day 04

31 May, 2022, Tuesday

After reporting at the Auditorium at 8:50 for the practice to begin at 9, we all gathered on the stage for the warm up exercises. We started with stretching, jumping and several of the exercises to relax our bodies.

As all of us now had an idea of the characters we were about to play. We all had scripts with us in our cell phones we started practicing a dialogues in different groups the stage was taken over by one of the groups and Neelesh sir to help them with their scene. The dance team worked on their dance routines at the front of the stage and the music pet took the back of the Auditorium to practice the songs and compose few other songs required for the play at 11:45 we were given a tea break and ask to assemble at 11:50 on the stage. We all sat in a circle and Neelesh sir took the centre and told us several things and gave us several tips to enhance our performance since the play to be performed classical and consist of what is called tough Hindi. Sir gave us several tips to work on our pronunciation as well. After that the characters of Yaksh and Yakshini took over the stage for their practice.

After the lunch break the actors and dancers came together for the composition of the Kaling war scene. Since this play consists of many songs and dances, and the most effective way to show a war scene could be nothing but dance, Astha ma'am choreographed dance routine for Kaling war and we practiced the dance routine.

At 5:30 we all gathered on stage again and sat in a circle and played different games. One of those games was the game we use to play in childhood in which the people sit close in a circle and one of them stands up and starts running around and silently drops a handkerchief behind anyone and the person when realize that handkerchief is dropped at their back gets up and chases them until the previous person takes their place. We also played games which demanded us to be attentive. After that we were free to go to our hostels and were instructed to take rest a healthy diet and stay hydrated.

Day 05

01 June 2022, Wednesday

We reported at the auditorium at 9 am and started with the warm up exercises - jumping, stretching, patting our body and then walking around the stage. Shehanshaah sir made us do different vocal exercise.

One by one all the scenes were practiced on stage while the music team and dance team got to their practice.

The different scenes we have been practicing for days, the different dialogues we have been learning for days have started to make sense now. The scenes we have been practicing all a long were like different parts of jigsaw puzzles which are starting to fit together to create a perfect picture i.e. our play. Being the student of Science and having little knowledge of history and that too of Mauryan history and the changes that took over Magadh over several centuries and turning it into the present day Magadh have been interesting and new to us. Since we had little background knowledge on this, working on this play had been as exciting as it was challenging. Several times directors and other teachers present there have given us little snipers of history lessons to make us understand the context and the concept of the things we are putting on stage.

In today's run through we all presented our dialogues accompanied by the scripts and had a complete practice with only couple of songs and dances missing here and there. In our break time we all brainstormed about the costumes and ornaments and discussed our ideas with Director sir and his team.

After the lunch we started practicing different scenes in different groups. To add the native touch to the play, the dhobi scene dialogues, Bhojpuri touch was added in which Gajendra sir, Hindi professor helped the students and with this the play took a better shape.

After the tea break at 4:00pm we had one final practice. Before leaving at 8:00 we all sat in a circle on stage and discussed today's session.

Day 06

02 June 2022, Thursday

We assembled at the auditorium at 9:00 for the practice. We did a little warm up exercises and started with our practice. Director Sir took the front row and kept refining the scenes and advising us required spots to beautify the performance.

We had our first costume trial today. Not all the characters were in their proper attire. Today we had our first rehearsal with complete music and dance. Since all of the scenes were not at their perfection, the refinement of scenes and polishing of the acting were being done by director and other member of his team.

The sequencing of the scenes was also finalized today and a list of scenes of the scenes was uploaded in the Whatsapp group. As much we were confused about the play at the very day, we started developing an understanding of the story.

After the lunch break the stage was taken over by the dance team for their practice and refinement of their choreography. After the tea break we were given an hour to practice our dialogues and take help from different staff of the team. At 5:00 we had another rehearsal of the play accompanied by different dances and songs.

We left at 8:00 with a task to brainstorm regarding the play and present our ideas tomorrow.

Day 07

03 June, 2022, Friday

All of us reported at the Auditorium at 8:50am for the practice to begin at 9:00am sharp. The agenda for today was to refine the scenes and work on coordination. Dances were practiced for betterment of the co-ordinations of the dancers. The entrance and exit were practiced. Different scenes were practiced on stage with the positioning of the blocks and characters. The choreography of last song was completed today. And with this the complete play was now composed.

As we are now working on the refinement of the scenes, we were taught to get involved with the other characters on stage. The expressions and voice modulation were focused more in today's practice. We were taught that acting is the reaction to every action. Timing and coordination among the co-actors is an important element in the play.

After that we were given lunch break at 1 o’clock and asked to meet at 2 for the run through. Before the first run through of the day, we were orientated about the backstage etiquette. To remain quiet and attentive in the backstage is a skill as well. We were orientated about props handling as well. To be attentive of cues is a prime requirement as a good performance requires good timing.

The complete run through of the play took place along with complete music and dances. The run time of the play was observed. After one complete run through, the observers sitting as audience pointed out all the parts that are needs to be polished. The holes and halves of different scenes were pointed out for us to practice and improve. Expressions and body language still lacks in the actors and needs to be developed.

At 4:30 we were given tea break.

After tea break, we all sat in a circle on stage and indulged in the exercise of "gabbling". The dialogues of the complete play were rehearsed in a quick manner. All the characters practiced their lines promptly. The music pit also participated in the activity.

The second run through of the play started after gabbling. No interference was given by directors and the complete run through took place along with the dance and music. The ending scene was polished and the effects imagined yesterday were incorporated which enhanced the intensity of the message.

Before leaving dancers were allotted their costumes and everyone was asked to keep a better health and get plenty of rest.

Day 08

04 June 2022, Saturday

The practice started at 10:00 with first run through of the day. Another song was added today which was skipped before. As the dancers practiced their routine in front of the stage, the actors practiced their scenes on stage. Additions to set kept happening. The decorations were added to stage props.

In today's practice, backstage ethics were emphasized. The constant talking in the stage wings and not being ready on cue should be avoided at all costs. We were instructed to take care of our props and keep them ready every time to avoid delay. After the tea break we began the first run through of the day.

After the lunch break, we all gathered for the second run through of the day.

The only team in the costume was the dance team. They had their colorful Navvari saris draped in a dhoti manner. We all took our respective positions and director sir took his seat at the back of auditorium. The run through commenced with Ganesh Vandana.

During the run through we noticed some new faces in the auditorium.

The new faces that we noticed in the empty auditorium introduced themselves after the curtain call. We could hear their claps booming into the empty auditorium. The sir and ma'am in that team seemed impressed and praised us for the good show. They introduced themselves to be from the film making and media team chaired by a very famous Bollywood director Subhash Ghai. They told how our support could be of help in the program called Manthan they plan to conduct soon.

After they left we were given a short tea break and Arunabh sir distributed us brochures and posters for the promotion of the show. We were asked to paste the posters in our respective hostels. We had a photo session with the posters and the team. We started the final run through of the day and after that sat in a circle on stage like every day, discussed today's session. After that Dr Arunabh sir and Dr Anandraj Sir spoke few words regarding the performance and expressed their happiness and wonder watching science students display such graceful grasp on the language and such polished performance. They also emphasised how the the impact of the story could be increased with little more efforts on the body language and expressions. After that we left at 8:15 with an advice to take rest and stay healthy.

Day 09

05 June 2022, Sunday

We assembled at the auditorium at 9 am sharp. After meeting at the auditorium we all did stretching and warm up exercise of 5-10 minutes. Before starting the rehearsal director sir and other instructors added their valuable suggestions and pointed out the areas they expect to see better results at.

Before getting on the stage all the respective groups had a gabbling session huddled together at the back. We had our first complete costume rehearsal today. Only dancers were not in their costume as their costumes were finalized the day before and deposited for ironing. Rest of us practiced in our costumes. The first run through of the day was done with costume.

After the run through we were given a lunch break of 1 hour and the second run through started at 2:30. Several scenes and dialogues were refined. The times when some of the students even forgot their dialogues, might be pressure of the coming performance, they were assisted by Shyaam Sir. Not even once any of the instructors, even these past days of workshop, made anyone feel negative. Praising each fine act, correcting every mistake and motivating and guiding towards betterment have been their way of work with us for which we will always be grateful.

The sets and props took the envision shape. We assisted in painting the pots and spray painting the Sanchi Stupa.

Before leaving we all sat around in a circle and Neelesh Sir announced how the last rehearsal we had was our final run through and all that remains now is the show. We were instructed to take plenty of rest and not feel pressurized for the show. Sir spoke few motivating words. After that Dr Arunabh Saurabh expressed how impressed he was with his students and he expressed his gratitude towards Neelesh sir and his team to give a beautiful shape to his poetry. We all left at 8:30 with a different energy and motivation and an instruction to meet at 11 am.

6 June, 2022, monday

Day 10

<u>The performance day</u>

The whole auditorium was booming with the energy. The lights were being set up and final touches were being given to the sets. We could see plenty of wires and lights being set up for the evening. All the students gathered at the Auditorium at 11:00. There was not going to be anymore run through, no scenes were to be practiced today. Only thing to be done today was to give our 100%.

We all wished each other and director sir and everyone one of the team who worked on us in these past 10 days. We all talked with each other and took photographs. It was a session to make memories and take photographs of them. Neelesh Sir and Dr. Arunabh Saurabh sir were really happy and just as excited for the performance as us. At 12 were instructed to meet at backstage for the makeup and preparation after lunch.

After lunch we began dressing up for the show. The teams of dancers were allotted a green room. Jagriti ma'am and Samriddhi ma'am helped everyone drape their navvari saris in dhoti manner. For makeup everyone was to report to Pooja ma'am, Astha ma'am and Vaibhavi Ma'am in other green room. The makeup of dancers was a heavy and complex art. Dancers were pictured as Apsara hence their features are to be enhanced and decorated in such a manner that it could be visible to audience in the bright light. The girls of music pit draped their matching saris in a simple back pallu manner and had their

hairs loose. For the actors different costume and makeup were used. Yaksha and Yakshini wore heavy makeup enhancing their features. As there were more students for makeup and less staff to assist, some of our friends of different courses also came to help. Muskaan B.A. B.Ed. 3yr, Madhu BSc BEd 2 yr and Shruti Toppo B.Sc. B.Ed. 2yr were few who helped us a lot in getting ready for the show on time. Before the show we all gathered at backstage holding each other close and Neelesh sir said few motivating words.

The auditorium got full in no time. There was a buzz of excitement among the audience. If not for this process of 10 days, mere seconds of presence on stage could make us all sweat. But these days made us so comfortable on stage event the show felt like one of the practice.

Seconds before the performance none of us were the students but our respective characters. The familiarity with the routine and the environment made us feel so comfortable.

When we took over the stage the only thing in our head was our dialogues. Despite of whole auditorium filled completely with audience none of us felt anything but the motivation to put up best show.

We enjoyed our performance and we enjoyed the curtain call. The applause were the clear evidence of our hard work.

After the performance we all stayed back for a while and took plenty of photographs with each other. We all made memories we'll cherish for lifetime.

The day of the performance was indeed a hectic one. Performing an entirely new art we have learnt and been practicing for days and then soaking up all the praises and glory is going to be one of the finest experience of our college life and have molded us into a news more confident individual.

07 June, 2022, Tuesday

Post Performance Get Ttogether

All of us met at upper canteen at 6:00 p.m. It was entirely different feelings seeing everyone together post performance. With hello and good evening congratulations and claps were shared. We all sat together in a circle just like we use to do while practicing.

In today's session everyone was asked to share their experience of the theatre workshop each and everyone took the centre stage and talk about their experiences starting with the directors.

Mr. Neelesh Deepak Sir, the director exchanged his warm regards with everyone and expressed his extreme gratefulness towards everyone. He shared his experience of working with a group as large as of 45 students and how it was a big challenge as the staff and the instructors with him but far lesson in number then us. But the fact that they all managed to handle us and walk us all through the process shows our dedication. Sir also expressed his thankfulness towards everyone for being really cooperative and really understanding of the process. Being a teacher to us and the professor of the subject as well, Sir shared how much a performance requires time and efforts. Doing a classical play like Aadhyanayika and using Hindi in it's pure form could've been a bigger challenge. Refining the script and putting the author's imagination on stage in the span of 10 days could've been a bigger challenge if not for the cooperation of Dr. Arunabh Saurabh sir, the author and Dr. Kulshrestha sir who have been there as a constant support.

Dr. Kulshrestha Sir, being a professor of Botany, was very pleased with the performance of students as History and pure Hindi has been pretty new to B.Sc. students. Dr. Kulshrestha sir expressed his happiness by congratulating all of us and our event coordinator and author of the play Dr. Arunabh Saurabh sir. Theater pedagogy plays an important role in the development of teaching skills. Talking a stage and making a complete use of it is an art. And theatre helps build each and every aspect of it. Standing in front of an audience, engaging them and then expressing your thoughts and message in an effective manner is a skill which develops with exposure and theatre provides all that.

Dr. Arunabh Saurabh sir expressed his gratitude towards Dr. Kulshrestha sir who helped making this workshop possible and Neelesh Sir for making his play such beautiful reality and that too by his own students. Sir also pointed out how students seem more comfortable in their body and space. The use of hand gestures and expressions while speaking is a result of their hard work in the workshop. The use of gestures omits the monotony out of speech and makes one an effective speaker.

After that each and every student was asked to share their experience of the workshop. We were asked to share the changes we experienced in us after the workshop.

The common thing shared by every one of us was the boost of confidence. The stage on which we rarely got chance to perform feels like a play space to us now. The ease of taking the centre of the stage, turning a blind ear to the hoots and howls of audience and delivering a powerful performance to them and then soaking us the glory during curtain call has been a massive gift by this workshop to us.

Saswat Mohanty who played the role of Emperor Ashoka in the play shared how much he got to learn. Saswat shared how each and everyone helped him build his confidence. Shenshaah sir and Neelesh Sir were like his personal coach throughout the process helping him refine his body postures and confidence. Enacting a powerful character like Ashoka demands a certain authority which he built slowly throughout the workshop.

Vaishnavi Rangadale who played the role of Suggi shared how this play was a challenge to her due to complicated Hindi but at the end of the workshop her pronunciation and understanding of the language increased exponentially. Vaishnavi shared how hard she used to practice her dialogues with some of her

friends who had higher proficiency of the language. The theater process was a warm experience for her which taught her classical dance, elegant Hindi and increased her confidence on stage.

Neeraj Parmar who played the role of one of the Mantri or Ministers and also was one of assistant directors shared how this experience played a role in building his personality. Coming from a Gujarati home, initially Neeraj had a hard time pronouncing certain words and understanding dialogues. But constant support by everyone helped him a lot. He shared how he has worked on few short films with his friends back home and how much he used to love that. And now he got the chance to perform in a project and that too in presence of live audience, it all felt like an achievement to him.

Sana Mirza, Simran Kumari, Akshata Laharia and many more students from the dance team expressed their heartiest regards to the choreographer ma'am, Ms.Astha Paribhasha. Astha ma'am choreographed really beautiful dance routines for the play. She has been so patient with everyone. Everyone expressed their love towards her. Astha ma'am was so kind and understanding throughout the workshop. Students shared how much she used to work on each and every step and each an every student. Her patience and kindness has been a major driving force for her students to put up their best performance.

Students from the music pit shared their joyful experience of working with Lakhan Sir. They got to experience the process of song composition for the first time. All the original songs of the play were composed Lakhan sir with input of students and each song was a beauty. Even after the play one could hear the audience singing those songs and dancing to their beats.

Anjali Rajput who played the character of one of the women shared how the role has been a challenge for her. Anjali shared how she was so different from the character she played. Being an NCC cadet herself she shared how being upfront and having a heavy demeanor has been her comfortable mood. But the character she was casted into demanded comedy and even tears. It was a challenge for her to portray these emotions and too in front of such large audience. Having done this and adding the theater experience to her list of best college memories, she feels so cool in her skin and so very confident of her newly developed acting skills.

Siddharth Rajan who played the role of one of the Yaksha shared initially how daunting everything was for him. But after the workshop on the 10th day on stage he managed to give his 100% and justified the character by being a confident actor and a graceful dancer all thanks to the team of teachers.

I Riya Gautam, got to play the role of Mantri. The experience of theatre workshop has really transformed me. Being and NCC cadet, I have always been very confident of my voice but with theater I learned that my voice might not be my only asset. I remember Vaibhavi Ma'am from makeup and costume department once complimenting me on my voice and giving me tips on refining my acting. Neelesh sir and Sheeshaah sir refined my stage presence and taught me to take the light and compel the audience with the art of acting. Dr Arunabh Saurabh sir throughout the process motivated everyone and made sure that each of know how hard we're working and beautifully we're giving life to his creation. He has been a constant support to every one of us. Arunabh sir also made me realize that theatre provides us with opportunity to learn everything and made me realize that be it singing or dancing, I can do everything and anything.

We the students of B.Sc. cannot put into words how much theater workshop has changed us. This workshop developed our bonding with each other and developed us as future teachers. The way we used to spend the whole day together and take care of each other, help each other with dance and dialogues deepened our understanding of group efforts and made us all very comfortable with each other. During workshop we all used work really hard on dialogues and pronunciation as we were all scared to make any kind of mistake with Hindi. During couple of days in the beginning we used to mug up the dialogues. But Neelesh Sir and Arunabh sir made dialogues easier for us by educating. Sir once explained us the complete Mauryan history and concept of Yaksha. Arunabh sir constantly used to help us with our pronunciation and explain us word meaning and context of sentences.

This workshop has transformed us into a better speaker, increased our ease with our national language, enriched our knowledge and made us a confident individual. As of now, we're not only students and future teachers but a performer as well. The art once learned would never leave you if stay connected with it. The process of this art has been such a delight that we see ourselves staying connected to it, thanks to our future profession and become the finest of the artists of our niche.

Report by Riya Gautam (B.Sc. B.Ed. 6sem Bio)

REPORT

Date : 29.05.2022

The second day of the Theatre Workshop titled “Addya Nayika” The director of drama Nilesh, The National School of Drama (NSD Trained), hindi Rangbhumi New Delhi introduced the theme of the day. The drama script was written by Dr. Arunabh Saurabh Assistant Professor, Department of Education in Social Sciences and Humanities (DESSH),RIE, NCERT, Bhopal. The director Nilesh and his team clearly demonstrated B. Sc. B. Ed – VI semester students their roles and responsibility of an individual and group work while perform the activity. Moreover, guided students how to improve their skills such as vocal sound, body movement, eye coordination, body exposure, coordinating with team and etc. However, by following the guided instruction students actively participated in the reharsal and improved gradually at satisfactory level to accomplish today’s Theatre Work. The experts have been checked their coordination and cooperation and gradual improvement. Afternoon session the director Nilesh and his team continued training students focusing Ganesh Vandana song and Yakshina song and Parrot song. Students developed spirit of oneness during song practice. The experts guided students very well. The program coordinator Dr. Arunabh Saurav was keenly observed overall performance of students and recorded events in both sessions and suggestive feedback given wherever necessary. Thus, the day ended with accomplishing the task fruitfully.

Anandaraj M
Assistant Professor of Education RIE, Bhopal

Day Two, Date 29.05.2022

"Yaksha" and "Yakshini" is a play work of drama practice intended for the theatrical performance by students of b.sc b.Ed 6 sem bio physical group. other classes are part of it. All the students were divided into different groups according to their allotment.

Group 1- around 16 students work practiced in Ganesh dance.

All students were learnt Wells step by step in the evening I could see them among confidence and clarity about dance

Need to be perfect in some part area like expression gestures during dance

Group 2- more than 20 students were practiced in drama.

Every student tried well but need to be practiced a lot to be clarity in the dialogue delivery

Need to be use paper write up to practice dialogue instead of mobile phones.

Group 3- around 10 students were practiced for songs of part of play.

Practice well at the end present well. feel expressions are missing among singers need to be added.

Day two was ended with day and rehearsal activity starting from Ganesh dance along with singing coordination needs to bring among the dancers.

Dr. M.S. Kariyappa

Day 1, 29 may 2022

The workshop began at 9:00 a.m. with exclusive exercise session. In the session students when through a rigorous exploration of movement. "Movement" and "Moving" carries a significant place in the workshop, play and moreover in pedagogy. In the skills taught in the relation to teaching learning, the skills of movement / skill of stimulus variation. In this skill of stimulus variation, purposeful movement (planned and purposeful movement) is needed to be practice by the teacher to draw students attention to an ongoing classroom teaching learning. The gestures help to make the classroom teaching learning more fruitful making teacher more expressive and effective. In the "exercise" done of the session will inculcate the expressive and effectiveness. The session took almost 45 minutes. After a break the session resumed with the discussion among the students about Yaksh and Yakshini. Student shared their research work with all. Next students was selected for specific engagement according to their choice, some students shows to engage themselves into dance singing painting and acting. All the students divided and practice under the evil guidance of experts. In the dance practice students learn about various poses of dances for the reaction dance. There was a break for 1 hour from 1 to 2:00 p.m. The practice resume from 2:00 p.m. again and continue to late evening.

On the fifth day of the workshop students are engaged in learning all the gestures and skills needed for the appropriate development of the character. The 3 groups were engaged in the collaborative learning and they practiced hard to reach to the level of performance. The dance practice initiated upon the gesture and movement. This is a process to initiate the pedagogical skills among the budding student teachers. The students involved in the singing practiced to in-tone and correct with lyrics and intonation initiating the voice modulations. The students are seen working in groups seem to inculcate the cooperative and collaborative spirit. The dialogue delivery and practice of the same improved day by day. The overall hardwork of the students and their mentors both were seen in their practice and the making of the play.

Dr. Deepti Kothekar

ROLES

1. Yakshini1 – Nisha Yadav
2. Yakshini2 – Mansvita Singh
3. Yakshini3 – Priyanshi Khatri
4. Yaksh – Siddhartha Rajan
5. Yaksh – Shubham Ahirwar
6. Yaksh- Mayank Gajabhiye
7. Painter- Sandesh Borse
8. Mantri1 – Riya Gautam
9. Mantri2- Dhaval
10. Mantri3- Neeraj Parmar
11. Mantri4 – Shristi Kumari
12. Samrat Pushyamitr Shungh- Akash Mohe
13. Samrat Ashoka- Saswat
14. Suggi- Vaishnavi Rahangdale
15. Bodh bhikshu- Bhavna Gehlot
16. Bodh bhikshu2- Astha Bhoi
17. Bodh bhikshu3- Akhilesh Jambulkar
18. Sainik- Tanuja Sharma
19. Sainik- Tripti Dahayat
20. Sainik- Yashodeep Burde
21. Village people – Anjali Rajput
22. Village people- Pooja Nimgade
23. Village people – Tejaswini Naragude
24. Village people- Uma Painkara

DANCE TEAM:

1. Sana Mirza
2. Simran Kumari
3. Divyanshi Rakholiya
4. Priyanka Kumari
5. Kumara Nisha
6. Manali Uttachitkar
7. Megha Banwanshi
8. Priya Rathore
9. Karishma Kaushal
10. Divya Kumari
11. Aksata Lahariya
12. Kanchan Amode
13. Papaya Suraskar
14. Prerna Mehta
15. Vaishnavi Rahangdale
16. Chetna Kumari

MUSIC TEAM:

1. Apoorwa
2. Chhaya Yadav
3. Muskan Panwar
4. Kamala Nayak
5. Ayrisha Sonadwale
6. Shruti Chaudhary

नाट्य प्रस्तुति- बी एस सी बी एड सत्र -6

नाटक- आद्य नायिका

नाटककार- डॉ अरुणाभ सौरभ

EXTERNAL RESOURCE PERSONS- Neelesh Deepak, Lakhan Lal Ahirwar, Astha Paribhasha, Dheeraj, Shanshah, Ravi Ahirwar, Pooja, Ritu Jha, Vaibhavi Nayak, Jagriti, Shyam Sundar

Director- Neelesh Deepak

Music- Lakhan Lal Ahirwar

Dance choreographer – Astha Paribhasha

Light- Dheeraj, Shanshah, Neelesh Deepak

Stage Craft and Sets- Ravi Ahirwar

Costume- Pooja, Ritu Jha

Makeup- Vaibhavi Nayak, Jagriti

Property- Dheeraj

Stage Management- Shyam Sundar, Hindi Rangbhoomi

INTERNAL RESOURCE PERSONS

Prof. Rashmi Singhai

Dr. Suresh Makwana

Dr. Daksha Parmar

Dr. Saurabh Kumar

Shri. Lokendra Singh Chauhan

Dr. Mahendra Barua

Dr. Gajendra Kumar Pandey

Dr. Sonal Sharma

Dr. Shivani Saini

Dr. Deepti Kothekar

Dr. Vishwas

Dr. M.S. Kariyappa

Dr. Anandraj

Md. Shahid

Dr. Nitin Ramteke

Dr. Dhirendra Kumar Shukla

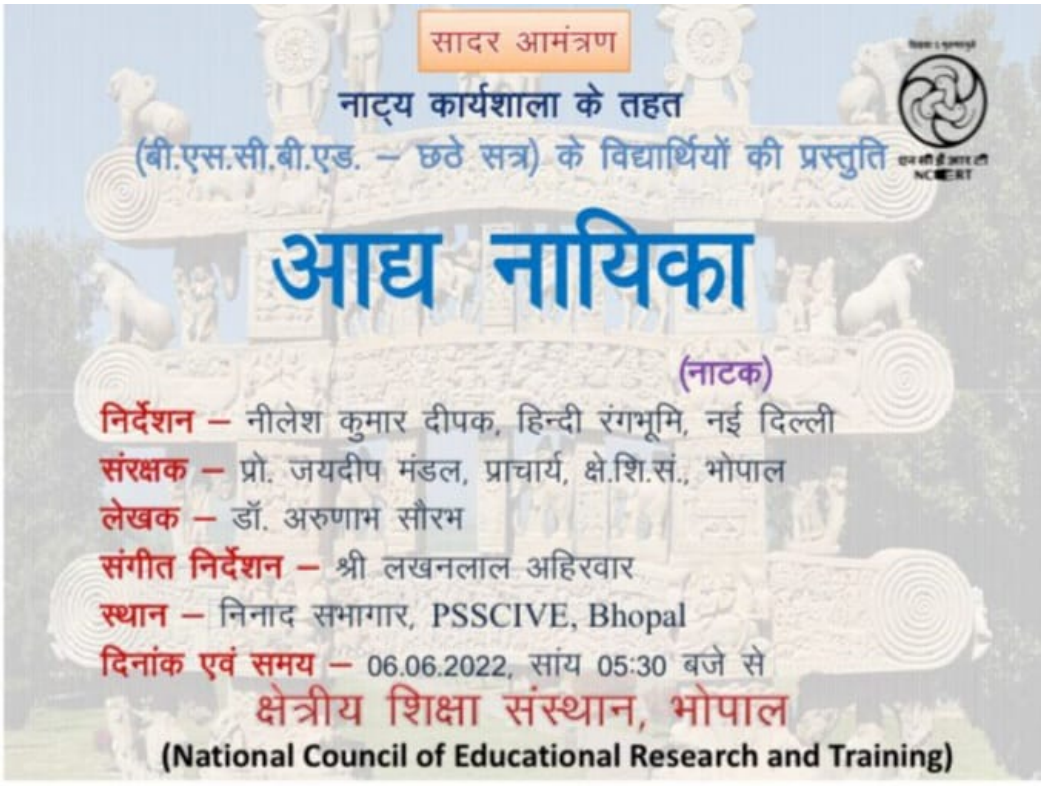

PAC-23.33

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल के सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए नाट्य कार्यशाला और प्रदर्शन के तहत

(बी.एस.सी.बी.एड. छठे सत्र के विद्यार्थियों की प्रस्तुति हिन्दी रंगभूमि, नई दिल्ली के मार्गदर्शन में)

आद्य नायिका

(नाटक)

लेखक –डॉ. अरुणाभ सौरभ,
निर्देशन – श्री नीलेश कुमार दीपक
संगीत निर्देशन – श्री लखनलाल अहिरवार

दिनांक – 6 जून, 2022,
सायं – 05:30 बजे से
PSSCIVE निनाद सभागार, श्यामला हिल्स, भोपाल

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी.,
श्यामला हिल्स, भोपाल

नाटक के बारे में

इस नाटक में इतिहास, मिथक और हमारा समय तीनों को एक साथ प्रस्तुत करके रचनात्मक आयाम दिया गया है। दीदारगंज की यक्षिणी सौ साल बाद पुनः एक नई भाव–भंगिमा और अर्थ–छवि के साथ हमारे सामने आती है। जहाँ एक ओर प्राचीन गणतंत्र और नगरों, उनके बीच के आपसी वैमनस्य, उनकी दुरभिसंधियों और षड़यंत्रों के साथ–साथ ज्ञान, विज्ञान और कला की प्राचीन उपलब्धियों को यथाप्रसंग उपस्थित करती है, वहीं एक स्त्री के स्त्रीत्व की तलाश है, जिनमें अथाह शक्तियाँ हैं। यह नाटक नए प्रतीकार्थ रचने के सामर्थ्य को दर्शाता है। इसमें वैभवशाली मगध और अखण्ड भारत की राजधानी पाटलिपुत्र के उत्थान और पतन की पड़ताल है। आद्य नायिका 'यक्षिणी' के सहारे देवलोक, गंधर्वलोक से लेकर मृत्युलोक तक पसरी उस पितृसत्तात्मक संरचना को भी प्रश्नांकित करता है जिसमें स्त्रियों का सदा से ही शोषण किया जाता रहा है। यहाँ इस बात को दोहराया गया है कि, स्त्री के बिना यह चाहे देव पुरुष हो या गंधर्व या इस धरती का सामान्य पुरुष, किसी के अस्तित्व की कल्पना संभव नहीं। प्रकृति और पुरुष के संयोग से सृष्टि के निर्माण की संभावना की बात भारतीय दर्शन करता है। नाटक के प्रदर्शन से शिक्षाशास्त्रीय विविध अवयवों को समझना आसान हो जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में यह प्रस्तुति प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति को रूपायित करती है और पौराणिक शास्त्रीय और लोक कलाओं का समायोजन भी!

निर्देशकीय

अरुणाभ सौरभ का नाटक 'आद्य नायिका' एक विशिष्ट लंबी कविता है। इस कविता का नाट्य रूपांतरण कर रंगमंच तक ले जाने में इनकी अथाह श्रम रहा है। आद्य नायिका नाटक के केन्द्र में दीदारगंज की यक्षिणी की मूर्ति है जो पटना संग्रहालय में संरक्षित है। साथ ही मौर्यकालीन यह मूर्ति प्राचीन भारतीय कला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। इस नाटक में इतिहास, मिथक स्त्री प्रश्न और वर्तमान का समूचा कोलाज उपस्थित है। आद्य नायिका यक्षिणी की सौंदर्यपरकता के साथ ऐतिहासिक में इतिहास को देखने के नज़रिए के साथ विचार का प्रारूप समाहित है। रंगमंचीय कला की दृष्टि की दृष्टि से आद्य नायिका मंचन मेरे लिए महत्वपूर्ण है।

– नीलेश कुमार दीपक

इस नाटक में संगीत पक्ष की असीम संभावना है। हमने इस नाटक में नाटककार द्वारा लिखित गीतों के अतिरिक्त कबीरदास, रवीन्द्रनाथ टैगोर के गीतों को भी संगीतबद्ध कर प्रस्तुत किया है। शास्त्रीय और लोक संगीत का समायोजन यहाँ सलीके से किया गया है। शास्त्रीय और लोक नृत्य की विभिन्न शैलियों का प्रयोग यहाँ आवश्यकतानुसार किया गया है।

– लखनलाल अहिरवार

(संगीत निर्देशक)

निर्देशक के बारे में

चिर परिचित रंग निर्देशक नीलेश दीपक का जन्म 1981, मधुबनी बिहार में हुआ। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय नई दिल्ली और संगीत नाटक अकादमी से प्रशिक्षण और प्रदर्शन के स्तर पर जुड़े नीलेश कुमार दीपक केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी के युवा रंगकर्मी नाट्य कार्यशाला 2001 पटना और भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा 'राष्ट्रीय छात्रवृत्ति योजना' 2006 के तहत रंगमंच में प्रशिक्षित है। आप नाटक–रंगमंच तथा फिल्म–टेलीविजन के विभिन्न आयामों – अभिनय, निर्देशन, बाल रंगमंच, शिक्षण–प्रशिक्षण, पठन पाठन और शोध–अनुसंधान में संलग्न हैं। विभिन्न स्कूलों में नाट्य शिक्षक के रूप में कार्य का अनुभव। देश के प्रतिष्ठित रंगनिर्देशकों के साथ रंगकार्य का बड़ा अनुभव आपके पास है।

आपके द्वारा निर्देशित नाटकों में मलाह टोली एक चित्र, भूख आग है, बिजुलिया भीजी, शिवाले का प्रेत, निरमोही बालमं, शवयात्रा के बाद देह शुद्धि, और केंचुली प्रमुख है। आपने बच्चों के साथ संवदिया, अंधेर नगरी, हम बच्चे हैं चाँद से, सदाचार का ताबीज, रसप्रिया, आजाद बकरियाँ, रंग–अबीर और काबुलीवाला आदि नाटकों का निर्देशन किया है। नाट्य शोध संस्था नटरंग प्रतिष्ठान से सम्प्रति संबद्ध है। हिन्दी रंगभूमि जैसी प्रतिष्ठित नाट्य संस्था में नाटकों का निर्देशन और अभिनय करते रहे हैं। आपको रंगमंच में

INSTITUTIONAL VALUES AND BEST PRACTICES

THEATRE WORKSHOP AND PERFORMANCE FOR PRE SERVICE TEACHER TRAINEES OF RIE, BHOPAL

"Movement" and "Moving" carries a significant place in the workshop, play and moreover in pedagogy. In the skills taught in the relation to teaching learning, the skills of movement / skill of stimulus variation. In this skill of stimulus variation, purposeful movement (planned and purposeful movement) is needed to be practice by the teacher to draw student's attention to an ongoing classroom teaching learning. The gestures help to make the classroom teaching learning more fruitful making teacher more expressive and effective.

The practice of the several art forms to stage a theater performance, learners go through a series if the exercises which help them emerge as a confident speaker and help them develop a close connection with not only the art but also with the viewers.

Specific Objectives

- To train pre-service teachers of RIE Bhopal with Indian Arts and culture through Theater.
- To train Pre-service teachers to use theater's experience in teaching learning
- To orient trainee teachers with exercises related to personality development, speech therapy, psychological observation, removing audience fear etc.
- As an outcome of the workshop a play will be prepared and performed through that pre service teachers will get the real feel of the modern Indian Theatre.

Two workshops were organized under this program, one was for B.Sc. B.Ed. 6th semester Adyanaika (28.05.2022 – 06.06.2022) and the other was Kabira Khada Bazaar Me , Play writer- Bhishma Sahani for B.Ed. M.Ed. (int.) 1st semester and B.Ed. and M.Ed. (23.01.2023- 01.02.2023). Date of performance : 02.02.2023.

2021

Only one workshop had orgnised due to pendamic situation by B.A B.ED 5th Semester name of the play – “HASYA CHUDAMANI BY MAHAMATYA VATSRAJ” Directed by Sourabh Anant date of the workshop : 14/11/2021 to 23/11/2021.

NIKE

वर्कशॉप में तैयार आद्य नायिका का हुआ मंचन

सिटी रिपोर्टर | क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में टीचर्स के लिए ड्रामा वर्कशॉप हुई। इसमें तैयार नाटक 'आद्य-नायिका' का मंचन सोमवार को किया गया। नाटक 'आद्य नायिका' का लेखन डॉ.अरुणाभ सौरभ ने और निर्देशन नीलेश दीपक ने किया है। प्रस्तुति बीएससी बीएड छठे सेमेस्टर के क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के विद्यार्थियों की रही। नाटक में इतिहास, मिथक और हमारा समय तीनों को एक साथ प्रस्तुत किया गया।

अरुणाभ सौरभ की आद्य नायिका का मंचन

भोपाल। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान , भोपाल के सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए नाट्य कार्यशाला और प्रदर्शन के तहत नाट्य प्रस्तुति आद्य-नायिका का मंचन सोमवार को पी.एस.एस.सी.आई.वी.आई के निनाद सभागार श्यामला हिल्स भोपाल में किया जा रहा है । नाटक आद्य नायिका का लेखन डॉ.अरुणाभ सौरभ ने और निर्देशन श्री निलेश दीपक ने किया है। प्रस्तुति बी.एस.सी बी.एड छठे सेमेस्टर के क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के विद्यार्थियों की रही और जिसे हिंदी रंगभूमि नई दिल्ली के सहयोग से किया गया ।

नाटक में इतिहास, मिथक और हमारा समय तीनों को एक साथ प्रस्तुत करके रचनात्मक आयाम दिया गया है । दीदारगंज की यक्षिणी सौ साल बाद पुन : एक नई भाव - भंगिमा और अर्थ - छवि के साथ हमारे सामने आती है । जहाँ एक ओर प्राचीन गणतंत्र और नगरों, उनके बीच के आपसी वैमनस्य , उनकी दुरभिसंधियों और षडयंत्रों के साथ - साथ ज्ञान , विज्ञान और कला की प्राचीन उपलब्धियों को यथाप्रसंग उपस्थित करती है , वहीं एक स्त्री के स्त्रीत्व की तलाश है , जिनमें अथाह शक्तियाँ हैं । यह नाटक नए प्रतीकार्थ रचने के सामर्थ्य को दशाता है । इसमें वैभवशाली मगध और अखण्ड भारत की राजधानी पाटलिपुत्र के उत्थान और पतन की पड़ताल । आद्य नायिका यक्षिणी के सहारे देवलोक , गंधर्वलोक से लेकर मृत्युलोक तक पसरी उस पितृसत्तात्मक संरचना को भी प्रश्नांकित करता है जिसमें स्त्रियों का सदा से ही शोषण किया जाता रहा है । यहाँ इस बात को दोहराया गया है कि , स्त्री के बिना वह चाहे देव पुरुष हो या गंधर्व या इस धरती का सामान्य पुरुष, किसी के अस्तित्व की कल्पना संभव नहीं । प्रकृति और 'पुरुष' के संयोग से सृष्टि के निर्माण की संभावना की बात

भारतीय दर्शन करता है । नाटक के प्रदर्शन से शिक्षाशास्त्रीय विविध अवयवों को समझना आसान हो जाता है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में यह प्रस्तुति प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति को रूपायित करती है और पौराणिक शास्त्रीय और लोक कलाओं का समायोजन भी।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में यह नाटक दस दिवसीय कार्यशाला में तैयार किया गया। इस नाट्य कार्यशाला में रंगमंच के तमाम बारीकियों मसलन अभिनय, संगीत, मंच परिकल्पना और नृत्य आदि तमाम अवयवों पर प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला का निर्देशन नीलेश दीपक ने किया।

कार्यशाला में संगीत प्रशिक्षक लखन लाल अहरिवार, नृत्य प्रशिक्षक आस्था परिभाषा और मंच पार्श्व के लिए धीरज शहंशाह, श्याम, पूजा, वैभवी आदि शामिल थे। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. अरुणाभ सौरभ, डॉ. सुरेश मकवाणा, विस्तार शिक्षा के अध्यक्ष प्रोफेसर प्रवीण कुलश्रेष्ठ तथा प्राचार्य प्रोफेसर जयदीप मंडल के साथ साथ क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के सभी संकाय सदस्यों की उपस्थिति महत्वपूर्ण रही।

स्त्री के बिना पुरुष के अस्तित्व की कल्पना नहीं

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के सभागार में नाटक 'आद्या नायिका' का मंचन करते कलाकार विद्यार्थी। ● **नवदुनिया**

भोपाल (नप्र)। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान की नाट्य कार्यशाला में तैयार नाटक 'आद्य नायिका' का मंचन सोमवार को किया गया। लेखक डा. अरुणाभ सौरभ और निर्देशक निलेश दीपक हैं। प्रस्तुति बीएससीबीएड छठवें सेमेस्टर के स्टडेंट्स ने दी। नाटक में इतिहास, मिथक और वर्तमान तीनों को एक साथ प्रस्तुत कर रचनात्मक आयाम दिया गया है। नाटक में यक्षिणी के सहारे देवलोक, गंधर्वलोक से लेकर मृत्युलोक तक पसरी पितृसत्तात्मक संरचना को प्रश्नांकित करता है, जिसमें स्त्रियों का सदा से ही शोषण किया जाता रहा है, जबकि स्त्री के बिना पुरुष के अस्तित्व की कल्पना संभव नहीं है।

साहित्यकार अरूणाभ सौरभ की काव्य कृति आद्य-नायिका का मंचन, यक्षिणी के माध्यम से स्त्री विमर्श की पड़ताल

By श्रुति कुशवाहा On Jun 7, 2022

ShareFacebookTwitterTelegramFollow us on Google News

भोपाल, डेस्क रिपोर्ट। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल (Regional College For Education Research and Technology) के सेवा पूर्व शिक्षक **प्रशिक्षुओं के लिए नाट्य कार्यशाला और प्रदर्शन** के तहत नाट्य प्रस्तुति 'आद्य-नायिका' **का मंचन किया गया। श्यामला हिल्स** स्थित कॉलेज के सभागार में सफलतापूर्वक मंचित नाटक '**आद्य नायिका**' का लेखन डॉ.अरुणाभ सौरभ और निर्देशन **निलेश दीपक ने किया** है। प्रस्तुति बी.एस.सी बी.**एड छठे सेमेस्टर के क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के विद्यार्थियों की रही और जिसे हिंदी रंगभूमि नई दिल्ली के सहयोग से किया** गया।

नाटक में इतिहास, मिथक और हमारा समय तीनों को एक साथ प्रस्तुत करके रचनात्मक आयाम दिया गया है। दीदारगंज की यक्षिणी सौ साल बाद पुन: एक नई भाव-भंगिमा और अर्थ-छवि के साथ हमारे सामने आती है। जहाँ एक ओर प्राचीन गणतंत्र और नगरों, उनके बीच के आपसी वैमनस्य, उनकी दुरभिसंधियों और षडयंत्रों के साथ-साथ ज्ञान, विज्ञान और कला की प्राचीन उपलब्धियों को यथाप्रसंग उपस्थित करती है। वहीं एक स्त्री के स्त्रीत्व की तलाश है जिनमें अथाह शक्तियाँ हैं। यह नाटक नए प्रतीकार्थ रचने के सामर्थ्य को दर्शाता है। इसमें वैभवशाली मगध और अखण्ड भारत की राजधानी पाटलिपुत्र के उत्थान और पतन की पड़ताल है। आद्य नायिका 'यक्षिणी' के सहारे देवलोक, गंधर्वलोक से लेकर मृत्युलोक तक पसरी उस पितृसत्तात्मक संरचना को भी प्रश्नांकित करता है जिसमें स्त्रियों का सदा से ही शोषण किया जाता रहा है। यहाँ इस बात को दोहराया गया है कि स्त्री के बिना वह चाहे देव पुरुष हो या गंधर्व या इस धरती का सामान्य पुरुष, किसी के अस्तित्व की कल्पना संभव नहीं। 'प्रकृति' और 'पुरुष' के संयोग से सृष्टि के निर्माण की संभावना की बात भारतीय दर्शन करता है। नाटक के प्रदर्शन से शिक्षाशास्त्रीय विविध अवयवों को समझना आसान हो जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में यह प्रस्तुति प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति को रूपायित करती है और पौराणिक शास्त्रीय और लोक कलाओं का समायोजन भी।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में यह नाटक दस दिवसीय कार्यशाला में तैयार किया गया। इस नाट्य कार्यशाला में रंगमंच के तमाम बारीकियों मसलन अभिनय, संगीत, मंच परिकल्पना और नृत्य आदि तमाम अवयवों पर प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला का निर्देशन नीलेश दीपक ने किया। कार्यशाला में संगीत प्रशिक्षक लखन लाल अहरिवार, नृत्य प्रशिक्षक आस्था परिभाषा और मंच पार्श्व के लिए धीरज शहंशाह, श्याम, पूजा, वैभवी आदि शामिल थे। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. अरुणाभ सौरभ, डॉ. सुरेश मकवाणा, विस्तार शिक्षा के अध्यक्ष प्रोफेसर प्रवीण कुलश्रेष्ठ तथा प्राचार्य प्रोफेसर जयदीप मंडल, संयुक्त निदेशक प्रो मेहरोत्रा पंसुंश के व्यावसायिक शिक्षा संस्थान भोपाल साथ साथ क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के सभी संकाय सदस्यों की उपस्थिति महत्वपूर्ण रही।

LINK-

https://mpbreakingnews.in/entertainment/poetry-work-of-literary-writer-arunabh-saurabh-proto-heroine-staged-msk/

https://www.jansandeshtimes.net/view/5894/lucknow-city/13

https://www.patrika.com/bhopal-news/life-is-not-imagined-without-a-woman-yet-exploitation-continues-7578151/

https://www.youtube.com/watch?v=Fahv5eG_b_Y&t=119s

YouTube IN

ARUNABH SAURABH AADYANAYIKA DDMP

आद्यनायिका पर दूरदर्शन के कार्यक्रम साहित्य सृजन में परिचर्चा sahitay srjan DD

Theater workshop : Phase II

Activity II date 23.01.2023 – 01.02.2023

Date of performance : 02.02.2023

REPORT ON THEATRE WORKSHOP

INTRODUCTION: Regional Institute of Education (NCERT), Bhopal conducts a 10 days theatre pedagogy workshop for integrated B.Ed. M.Ed. Ist Semester Integrated Course. Into which they invite a group of professional trainers to teach the fundamentals of theatrical art of different types such as acting, background music, stage management, direction, lights, makeup, dressing, dialogue writing, dance choreography and many more things. Besides of which students of respective class have to prepare a drama/skit within the duration of these 10 days and to perform it. To represent and improve the skills they have learnt in these past 10 days. This workshop also has an educational value and also important for academic purpose.

THEATRE PEDAGOGY: In an international context, the term "theatre pedagogy" may appear somewhat awkward; however the term makes clear this subject's relation to the art form of theatre and its central significance in terms of contemporary developments in educational theatre here in Germany. **Theatre pedagogy** is an independent discipline combining both theatre and pedagogy. As a field that arose during the 20th century, theatre pedagogy has developed separately from drama education, the distinction being that the drama teacher typically teaches method, theory or practice of performance alone, while theatre pedagogy integrates both art and education to develop language and strengthen social awareness.

KABIRA KHADA BAZAAR ME

Kabira Khada Bazar unconcerned, determined and fierce - in short Mastmaula - Kabir's personality has influenced India's mind and soul for centuries. This is the reason why Kabir's verses have been on the lips of Indians for five hundred years and so many stories about him are well known. This person, who tirelessly fought against the dictatorship, bigotry, extravagance and misconceptions of his era, is still established among us as a permanent and inspiring value. This is the second play-creation after Hanush by well-known progressive story writer Bhishma Sahni, which has received wide acclaim on Hindi theatre. Kabir's raucous fun, ruthless arrogance and epoch-making thinking are present in this work with full vitality. Along with this, it has also been revealed that Kabir's literature was only a medium to break social inertia, with the help of which he fought on many fronts. While going through the work, the reader easily connects this struggle of Kabir with the various distortions of the contemporary Indian society, despite all its contemporary sociality. In short, this play by Bhishma Sahni makes Kabir struggling in the medieval environment - including his family and social context - relevant even today.

A 10 days workshop on Theatre was organized by Dr. Arunabh Saurabh and OTHER Theatre group Bhopal in RIE Bhopal from 21/01/2023 to 01/02/2023. The artist who conducted the workshop is Mr. Avijit Solanki, a Writer, Director and an Actor who completed his one year diploma from Ist batch of MP School of Drama and Bachelor in Direction from National School Of Drama Delhi. He is the founder of OTHER THEATER, a group of theatre enthusiasts.
The workshop consisted of three main wings of theatre, namely: writing, directing and acting which were the topics he mainly focused on.

The event started with an ice breaking session which was interactive and full of energy. The speaker advised on the three wings of a Drama - Writing, Directing and Acting. Writers were provided with a

clear image on how to compose a story and basic ideas and division of a script. For the directors, he introduced composition of the shots and the essence of creating suspense by controlling what the audience sees. For the actors, he explained the importance of eye movement, facial expressions and body language. They divided us into small groups and gave us a home work to prepare a 5 minute skit for audition purpose. Students also started to read the script of play. Randomly many students read the various characters so that Director can shortlist the candidates for various roles.

Ms. Asfiya Jamal, a researcher of Anthropology and theater for her doctorate from Frankfurt University also joined for the purpose of data collection and as assistant director of the play.

On second day music director Mr. Abhishek Dube with his team Mr. Sanjay and Mr. Deepak Nema told about the importance of music into the drama or film making. He started with basic practice of 'Sa' and students learn many exercises that helped them to improve their voices and opened their vocal chords. Also he teach a song that is "**Moko kaha dhundhe re bande**" of Saint Kabirdas who is the central character of the play. Students further read the script of play that was remaining on first day.

On third day Mrs. Sapna Yadav and Mr. Badal Pratap Singh joined the workshop and told students a lot about dances and their benefits in daily life and how important they are in drama. Then students did a variety of exercises. These exercises helped them to control our body movements. After it students went for script reading and the director's team went for auditions.

On day four Ms. Jagrati Gupta and Ms. Pooja joined us and they told us about the importance of costume, dresses and role of makeup respectively into a drama. After that students start practicing their scenes and remaining students which were selected as actors joined the music pit and costumes department as per their interest. They provided equal opportunity to each student to perform. Simultaneously students prepared one more song "**Jhini jhini bheeni chadariya**" of Saint Kabirdas for the play.

On fifth day of workshop the script was almost ready after a lot of editing. Mr. Shahanshah Ahmed joined and teaches students about different props and stage management. Students further prepared their scenes and practiced in singing chorus. They add a new song "**Anhad ka baaja**" of Vidhyapati.

For day six and seven students prepared all the acts of play and filled them with dance and music. They made different type of formations. Students prepared two or three more songs such as "**Nirbhay Nirgun Gun Gaunga**" of Saint Kabir and one of his friend Raidas that is "**Bhala hua mori Gagari footi**" and a regional marriage song required in one scene of play.

On eighth day, the practice of play was almost completed and a new member Mr. Praveen Namdev joined us and he told about how to use lights into a play and its significance in the drama. Also students tightened some of the loose ends of drama and prepared formations of dances.

On ninth day students practiced tightly, dresses and costumes were distributed to everyone so that they can check whether it is perfect or not. Students practiced a lot and removed small errors of the different scenes. Some of students prepared props, others prepared certificates and few of them prepared invitation posters and brochure of the drama.

On the last day of workshop we finally moved to the place where students are going to perform so that we have an idea of length and breadth of stage. Students practiced hard there for last two time, removing errors and improving themselves.

The play began at 5:00PM on 2nd February , 2023 in *NINAAD AUDITORIUM OF PANDIT SUNDARLAL SHARMA CENTRAL INSTITUTE FOR VOCATIONAL EDUCATION(PSSCIVE))*, SHYAMLA HILLS BHOPAL with an audience of above hundreds of students, faculty and guests. Everybody enjoyed the play a lot it was a successful play performed by the students of integrated B.Ed. M.Ed. 1st sem and guided by Dr. Arunabh Saurabh and OTHER THEATRE, BHOPAL. Program ended with certificate distribution, speech of principal sir followed by Director of the play and vote of thanks.

THEATRE IN EDUCATION

ELEMENTS:-

A. VOCAL

- Projection (according to space and numbers of audience/students).
- Clear Articulation (understanding matter).
- Various intonations (to produce harmonious speed and sound for producing interesting teaching, so class won't be bored).
- Right punctuations (to clarify the phrase with right meaning).
- Breathing techniques (to overcome nervous and tense for dialogue purpose).

B. PHYSICAL

- Body language (for acting / teaching purpose).
- Expression of emotions.
- Stamina (to sustain delivering energy of performance / presentation).
- Action- reactions (two way communication).

C. MENTAL

- Focus and concentration (activities in control / to finish up syllabus).
- Emotions.
- Positive Manipulations.
- Improvisation.
- Awareness and sensitivity (relationship among student and colleagues).

D. PERFORMANCE STRUCTURE

- Pacing (in acting / presentation).
- Momentum (in acting / teaching).
- Blocking (on stage / classroom).
- Adaptation to space(Stage) – Stage size, numbers of audience, set, technical
- (Classroom) – Classroom size, numbers of student and environment

FACTORS OF DEVELOPMENT IN EDUCATIONAL THEATRE COURSE:

- **To encourage fun teaching and learning activities in classroom:** Fun learning (concept in teaching and learning their lesson through role play and theatre Games based on: memory, observation, imagination, alertness , coordination, trust, vocabulary, imitation, space writing, voice culture, body language, five senses, etc)
- By using this method, students are able be more independent and explore things by themselves.
- **To enhance soft skills among the teachers through theatre activities:** Soft skills can be defined as a good relationship which one has among himself and people around him, which can be divided into two - **interpersonal and intrapersonal.** Which means someone who can have a good relationship within himself and others including environments especially in communication.
- **Theatre helps to enhance:** communication skills, problem solving techniques, critical thinking skills, high self confidence and motivation.
- **To self prepared in core curriculum activities and school occasions:** By implementing theatre in their lesson plan and teaching methods with various class room activities like role play, musical poems, visualizing lessons, improvisations, etc.
- **To encourage creative and critical thinking among the teachers:** Critical thinking skills like analyzing, applying standards, information seeking, logical reasoning, and predicting, transforming knowledge.

SKILLS:-

- Communication Skills
- Problem Skills and Critical Thinking Skills
- Teamwork Skills
- Leadership Skills
- Ethics and morality

IMPROVEMENT:-

To be a good teacher!

Teachers should set their mind and asks these questions to themselves:

- a. What are the descriptions of a good teacher?
- b. How to make the teaching process become fun and interesting?
- c. How to control students in a very limited area?
- d. How to become a creative teacher?
- e. How to make sure the teaching and learning have been delivered well and can be understood by students?

All of these questions need to be answered with certain skills and practice.

Not all the students/teachers have the creative skills. Thus, 'Theatre in Education' is a hope for the students and teachers to think beyond their imagination.

A teacher is a story teller; a good teacher is the one who can be the best actor!

- In other word, best teacher is the one who can deliver the knowledge effectively.
- To be the best, they must do their very best.
- Thus, teacher should bear in mind to understand the rules of the actor and theatre performance.

After the completion of the workshop students feel development in their personality, confidence level, singing skills, dancing skills, acting skills, stage management, coordination, dialogue delivery, quick actions, working with props, team work, leadership skills, etc..

Dr. Poonam Aggarwal
Assistant Professor
Regional Institute of Education, NCERT, Bhopal

"समाजिक समरसता का जीता जागता उदाहरण रहे कबीर"

सभ्य समाज के सभ्य नागरिक इक्कीसवीं सदी में सामाजिक समरसता पर गहन विमर्श कर रहे हैं। मगर सदियों पहले भी यदि इस विषय पर नजर दौड़ाई जाये तो यह विषय प्रासंगिक रहा है और ऐसे एक नहीं अनेक व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने समाज में व्याप्त विद्रूपताओं, असंगतियों एवं धर्म के नाम पर छिन्न-भिन्न पडे समाज को जोड़ने के लिए सामाजिक समरसता को एक साधन के रूप में समझ कर इसे लाने का प्रयास किया है। हमारे धार्मिक ग्रंथ भी इस तरह के अनेक प्रसंगों को हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं।

भारतीय समाज कर्म प्रधान समाज रहा है और कर्म के आधार पर रही वर्ण व्यवस्था कब इतनी कलुषित हो गयी कि पता ही नहीं चला। जब भी समाज आंतरिक कलह का शिकार होता है, तो बाहरी आततायी शक्तियों को एक मौका मिल जाता है, उस भेदने का, तोड़ने का। यही हश्र हुआ हमारी सामाजिक व्यवस्था में रहे भारतीय समाज का। कब जीविकोपार्जन के लिए अपनाई गयी व्यवस्था समाज के तथाकथित पहरेदारों के दिलो दिमाग में विक्षिप्तता पैदा कर आपसी वैमनस्यता पैदा करती चली गई और फिर समयकाल के साथ साथ छुआछूत जैसे अमानवीय कृत्यों को खुद में समाहित कर इस समाज के विघटन और पतन का कारण बन गयी, पता ही नहीं चला।

कबीरा खड़ा बाजार में

भीष्म साहनी कृत इस नाटक में वर्णित विभिन्न घटनायें कबीर दास के जीवन के एवं उस काल के समाज के श्वेत श्याम पक्षों को बड़े ही सजीव रुप से उजागर करतीं हैं। इसका कारण भी यह है कि भीष्म साहनी स्वतंत्र व्यक्तित्व वाले, गहन मानवीय संवेदनाओं के सशक्त हस्ताक्षर रहे हैं, जिन्होंने भारत के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक यथार्थ का स्पष्ट चित्र अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया है। उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी कि उन्होंने जिस समय को जिया, जिन संघर्षों को झेला, उसी का यथावत चित्र अपनी रचनाओं में अंकित किया। वे अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक विषमता व संघर्ष के बंधनों को तोड़कर आगे बढ़ने का आव्हान करते थे। उनके साहित्य में मानवीय करुणा, मानवीय मूल्य व नैतिकता विद्यमान है और यही सबसे बड़ा कारण है कि कहीं न कहीं पाठकीय दृष्टि से वो कबीर के समकक्ष ही दिखाई देते हैं और "भागो नहीं दुनिया बदलो" कहावत को

चरितार्थ भी करते हैं। आपकी कहानियों पर आधारित दूरदर्शन धारावाहिक 'तमस' एक दौर का सफलतम धारावाहिक रहा है। एक शिल्पी के रुप में वो सिध्दहस्त कलाकार रहे हैं।

"कबीरा खड़ा बाजार में" इस नाटक में कबीर के माध्यम से दुनिया के महानतम संत, समाज सुधारक, समरसता के वाहक, सामाजिक विषमताओं पर तार्किक प्रहार करने वाले, आडंबरहीन - भक्ति एवं आध्यात्मिकता के वास्तविक स्वरूप को समझकर धार्मिक उन्माद के विरुद्ध आवाज़ उठाने वाले, आत्मीय उत्थान एवं बेहतर समाज के निर्माण के लिए प्रयास करने वाले कबीर के व्यक्तित्व के विविध आयामों को एवं उनके गरिमामयी जीवन की झांकी को प्रस्तुत किया गया है।

रंग मंच शिक्षा शास्त्र

रंगमंच शिक्षा शास्त्र, रंगमंच और शिक्षा शास्त्र दोनों का संयोजन करने वाला एक स्वतंत्र विषय है। बीसवीं शताब्दी के दौरान उभरे एक क्षेत्र के रुप में नाट्य शिक्षा शास्त्र, नाट्य शिक्षा से अलग विकसित हुआ है। अंतर यह है कि नाट्य शिक्षक आमतौर पर अकेले प्रदर्शन की विधि, सिद्धांत और अभ्यास सिखाता है, जबकि नाट्य शिक्षा शास्त्र भाषा के विकास के लिए कला और शिक्षा दोनों को एकीकृत करता है और सामाजिक जागरूकता को मजबूत करता है। रंगमंच शिक्षा शास्त्र नाटक व मंचकला में निहित हैं।.

रंगमंचशिक्षाशास्त्र छात्रों के बहुमुखी विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है, इसके द्वारा छात्रों में आत्मविश्वास में वृद्धि होती है, साथ ही साथ भाषाई कौशल का विकास होता है। छात्र यह सीखते हैं कि ध्वनि प्रवर्तन किस तरह से किसी अभिनय में जान फूंक सकता है। छात्र - छात्राएं जब अपने डायलॉग याद करते हैं, तब यह उनकी स्मरण शक्ति को बढ़ाने का कार्य करता है। छात्र छात्राएं यह सीखते हैं कि किस तरह से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करना चाहिए। शर्मीले स्वभाव के छात्र-छात्राओं की झिझक दूर करने में यह सहायक होता है। छात्र छात्राओं की सृजनशीलता एवं सर्जनशीलता दोनों को ही यह बढ़ाने का कार्य करता है। उनके अंदर साहित्यिक अभिरुचि का विकास होता है। अतः रंगमंच शिक्षा शास्त्र को अनिवार्यतः पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना ही चाहिए। रंगमंच शिक्षा शास्त्र के अंतर्गत शिक्षा संकाय खासकर बीएड एमएड, प्रथम सेमेस्टर के छात्रों के लिए कार्यक्रम संयोजक, हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ अरुणाभ सौरभ द्वारा दो दिवसीय उन्नमुखीकरण का आयोजन किया गया। उसके बाद यह निश्चित हुआ कि भीष्म साहनी कृत नाटक, "कबीरा खड़ा बाजार में" का मंचन किया जाएगा, जिसके लिए दस दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला निर्धारित की गयी।.

डॉ सौरभ की परिकल्पना को साकार रुप देने के लिए अभिजीत सोलंकी की टीम का चयन किया गया। नाट्य निर्देशन अभिजीत सोलंकी का एवं संगीत निर्देशन अभिषेक दुबे का निर्धारित किया गया। नृत्य संरचना के लिए सपना यादव एवं बादल सिंह का सहयोग रहा। कुल मिलाकर दस लोगों की समृद्ध टीम इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए चयनित की गयी।.

प्रथम दिवस छात्र छात्राओं का आॅडीशन पात्र चयन के लिए किया गया। कार्यशाला के द्वितीय दिवस संगीत व नृत्य की टीम को भी चयनित किया गया। कार्यशाला का आरंभ विभिन्न प्रकार की एक्सरसाइज एवं वार्मिंग सेशन से किया गया, तत्पश्चात आॅडीशन चलता रहा, जिसका मुख्य उद्देश्य था छात्र छात्राओं की झिझक दूर कर उन्हें नाट्य विधा में अपने पात्रों के अनुरूप ढ़ालना। इसके लिए अत्यावश्यक होता है कि आप झिझक छोड़ कर एकाग्रता से अपने पात्र के अनुरूप स्वयं को अभ्यस्त करें एवं स्वयं में उसे महसूस करने लगें। कार्यशाला के तृतीय दिवस संगीत दल के साथ मिलकर गानों का चयन किया गया और दो तीन बार उन गानों को सभी वाद्य यंत्रों के साथ गाने की प्रेक्टिस की गयी। अंतिम चयन के बाद प्रतिदिन आरंभ में ही संगीत दल को कुछ व्यायाम जो मुख एवं ध्वनि से संबंधित होते हैं, करवाये जाने लगे और फिर उसके बाद सुर, लय, ताल के साथ उनके गायन का अभ्यास आरंभ हुआ जो कि प्रतिदिन दो से तीन-चार बार चलता रहता। चतुर्थ दिन पात्रों के परिधान का चयन किया गया। साथ ही साथ आवश्यक सहायक सामग्री का चयन एवं निर्माण आरंभ हो गया।

भीष्म साहनी कृत नाटक को तीन सीन में विभाजित किया गया। उसी हिसाब से छात्रों को डायलॉग याद करने के लिए दिये गये, साथ ही साथ उन्हें बोलने की एवं एक्टिंग करते हुए आत्मसात करवाने के लिए अलग अलग फिर साथ-साथ लगातार अभ्यास करवाया गया। यह पंचम एवं छटे व सातवे दिवस तक चलता रहा। फिर सातवें, आठवे एवं नवे दिन सभी पात्रों को संगीत दल व नृत्य दल के साथ पूर्ण मंच प्रबंधन एवं सज्जा को ध्यान में रखते हुए अभ्यास करवाया गया। यह अभ्यास बहुत ही महत्वपूर्ण रहा और सुबह दस बजे से आरंभ होकर रात्रि नौ बजे तक चलने वाले इस अभ्यास के परिणामस्वरूप छात्र छात्राएं अपने पात्र में रमकर जीवांत अभिनय करने लगे। डायलॉग भी सभी को याद हो गये थे, साथ ही साथ बायस मोडयुलेशन और पात्रानुरुप हावभाव उनमें उभर कर सामने आने लगे थे। दसवें दिन भी इसकी ही पुनरावृत्ति हुई मगर वेशभूषा में। ग्यारहवें दिन उन्होने सभागार में दिन में दो बार अभ्यास किया और फिर शाम 5 बजे से इस नाटक का मंचन किया गया। खचाखच भरे निनाद सभागार में शहर के वरिष्ठ साहित्यकार एवं रंगकर्मी के साथ-साथ क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, डी एम ई एवं पंडित सुंदर लाल शर्मा

व्यवसायिक शिक्षा केंद्र के संपूर्ण स्टाफ एवं छात्र छात्राओं के मध्य, "कबीरा खड़ा बाजार में" नाटक का शानदार मंचन हुआ। सभी दर्शक मंत्र मुग्ध से देखते रहे और आनंद लेते रहे। साथ ही साथ जीवांत अभिनय की सभी ने सराहना भी की। ऐसा कहीं भी महसूस ही नहीं हुआ कि ये नवांकुर हैं, बल्कि दक्ष अभिनेता - अभिनेत्री के समान जीवांत अभिनय प्रस्तुत कर रंगमंच शिक्षा के महत्व एवं उपयोगिता पर मोहर लगा दी।

कार्यक्रम संयोजन एवं नाट्य परिकल्पना डॉ अरुणाभ सौरभ द्वारा बड़ी दक्षता से कई गयी है। स्वागत उद्बोधन एवं नाटक का परिचय ज्ञानवर्धक एवं सारगर्भित रुप से डॉ सौरभ द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस नाटक के निर्देशक अभिजीत सोलंकी अदर थियेटर के संस्थापक सदस्य होने के साथ-साथ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय निर्देशकों के साथ रंगमंच का अनुभव रखते हैं। आपकी संपूर्ण टीम ने बड़ी लगन एवं मेहनत से छात्र छात्राओं को प्रशिक्षित किया। रिहर्सल के दौरान समय-समय पर दिये गये सुझाव अमूल्य होते हैं, क्योंकि वही सफलता की ओर ले जाते हैं। ऐसे सभी सुझाव डॉ अरुणाभ सौरभ, अभिजीत सोलंकी, दीपक नेमा, अभिषेक दुबे, सपना यादव, बादल सिंह, अस्फिया जमाल और आंतरिक स्रोत सदस्य के रूप में डॉ मीनू पाण्डेय, डाॅ दलेल सिंह, डाॅ गजेंद्र रावत एवं पूनम अग्रवाल द्वारा दिये गये।.

दस दिवसीय कार्यशाला के दौरान प्रो जयदीप मंडल (प्राचार्य), प्रो बी रमेश बाबू (विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग), प्रो चित्रा सिंह (अध्यक्ष, विस्तार शिक्षा विभाग), डाॅ लोकेन्द्र सिंह चौहान, डाॅ सुरेश मकवाना, डाॅ अश्विनी गर्ग, डाॅ एल के तिवारी, डाॅ सौरभ कुमार, डाॅ गजेंद्र पांडेय, डाॅ महेंद्र बरुआ एवं सभी प्राध्यापकों का मार्गदर्शन मिलता रहा, जिस कारण सफल और प्रभावी मंचन संभव हो सका।

डॉ मीनू पाण्डेय, सहा-प्राध्यापक,
शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल Mob- 7987141073

रंगमच शिक्षणशास्त्र कार्यशाला रिपोर्ट

रंगमच शिक्षणशास्त्र रंगमंच शिक्षा से अलग विकसित हुआ है, इस अंतर के साथ कि रंगमंच शिक्षक आमतौर पर अकेले अभिनय की विधि, सिद्धांत और अभ्यास सिखाता है। इसके विपरीत, रंगमच शिक्षणशास्त्र सामाजिक जागरूकता को विकसित करने और मजबूत करने के लिए कला और शिक्षा को एकीकृत करता है।

शैक्षणिक रंगमंच का उपयोग करना एक आधुनिक दृष्टिकोण है और विशेष रूप से छात्रों के लिए आकर्षक है। नाट्य अभ्यास शैक्षणिक पद्धति की एक संपत्ति है जो छात्रों को सूचना के केवल रिसीवर के बजाय उनके सीखने के खोजकर्ता बनने की अनुमति देता है। रंगमंच के माध्यम से, छात्र वर्तमान से विद्यालय के अतीत के अध्ययन को बढ़ावा देते हैं।

शिक्षा में शैक्षणिक रंगमंच ने शिक्षक प्रशिक्षुओं और युवाओं के लिए एक सीखने का माहौल प्रदान किया है, जहां वे उठाए गए मुद्दों के बारे में सोच सकते हैं और अपने लिए कार्यों के परिणामों की जांच कर सकते हैं।

रंगमच शिक्षणशास्त्र ने खुले और संवादी समुदायों के भीतर प्रदर्शन कलाओं के अभ्यास और शिक्षणशास्त्र को प्रतिबिंबित किया और विकसित किया। रंगमंच ने आलोचनात्मक, अभिनव सोच, बहु-विषयक बातचीत, बहु-कलात्मक सहयोग और एक प्रयोगात्मक दृष्टिकोण की ओर मार्गदर्शन किया। प्रोग्राम की नींव व्यक्तिगत अनुभव और धारणाएं हैं, जिन्हें अन्य छात्रों, शिक्षकों और कला शिक्षाशास्त्र के अकादमिक क्षेत्र के साथ खुली बातचीत में लाया जाता है।

कबीर का चरित्र, युवा लोगों और दर्शकों को प्रतिबिंबित कर सकता है, जो लोगों को कबीर के शैक्षिक संदेशों को उनकी सोच में शामिल करने में मदद कर सकता है। रंगमंच शिक्षण शास्त्र दुनिया की समझ में बदलाव लाना चाहता है, खासकर बच्चों और युवाओं के बीच। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, गैर-मौखिक और गैर-लिखित भाषा विकसित करने, नाटकीय कौशल और नाटकीय शब्दावली का सम्मान करने और समुदाय में समस्याओं को दूर करने के लिए सामूहिक कार्रवाई का उपयोग करने सहित कई अन्य कौशल सिखाए और सीखे गए।

डॉ ज्ञानेंद्र रावत

असिस्टेंट प्रोफेसर शिक्षा विभाग

पात्र-परिचय

कबीर : रोशन

लोई : बादल

रैदास : रवि

सेना : रश्मिबाला

पीपा: श्रद्धांजलि

बशीरा: अजीत

सिकंदर लोदी: गुरमीत परमार

कोतवाल: प्रणव पवार

अधिकारी: श्वेता

मौलवी: अमूल

साथी 1: परवेज

साथी 2: प्रकाश

कायस्थ: सुचारिता

शेख: राजा गणेश

सिपाही 1: कल्याण

सिपाही 2: दिब्यज्योति

सिपाही 3: पवित्र

भिकारी: देवयानी

महंत: रागेश्वरी

साधु: सदभावना

चेला 1: साकेत

चेला 2: पंकज

चेला 3: पवित्र

नागरिक 1: ऋषभ

नागरिक 2: अदिति

नागरिक 3: आकांक्षा

नाई: दुर्गेश

लड़का 1: सुधांशु

लड़का 2: आलोक श्रीवास्तव

भक्तगण(झांकी):- दुर्गेश, आलोक यादव, आंचल, प्राची, सुधांशु, पवित्र, हेमंत, शिवानी, ऋचा सांभरि, क्रिस्टी, निशा, सुप्रीत , तनिष्क

विवाह नृत्य:- ऋचा सांभरि, आंचल बेहेरा, नेहा गंधर्व, सुभाषिनी, निशा, सुप्रीत, आसिमा, क्रिस्टी, राजलक्ष्मी, श्रृद्धांजलि, प्राची

संगीत समूह:-

दिग्विजय यादव, शशिकान्त बेहेरा, प्रकाश चंद्र पंडा, अश्विनी बिस्वाल, आलोक चंद्र, समीर सी.टी., हेमंत कुमार दाश, तीर्था वी., प्रिया निराला, दीप्ति कासदे, आशिता

• झीनी झीनी नृत्य :-

मिनीषा , तनिष्क , सुधांशु ,ऋचा सांभरि, आंचल बेहेरा, नेहा गंधर्व, सुभाषिनी, निशा, सुप्रीत, आसिमा, क्रिस्टी, राजलक्ष्मी, श्रृद्धांजलि , प्राची, आकांक्षा , हेमंत कुमार दास , दुर्गेश , रवि , शिवानी

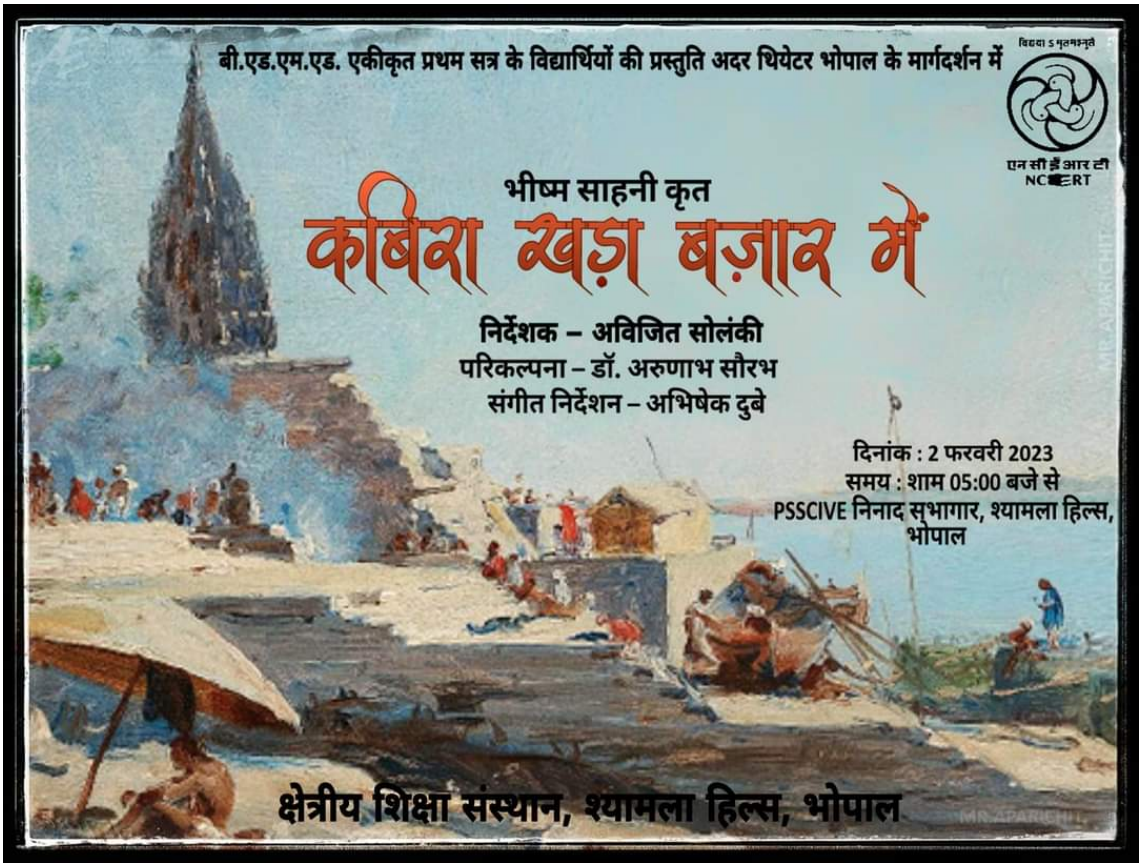

संगीत दल:

दिग्विजय यादव
शशिकान्त बेहेरा
प्रकाश चंद्र पंडा
अश्विनी बिस्वाल
आलोक चंद्र
समीर सी.टी.
हेमंत कुमार दाश
तीर्था वी.
प्रिया निराला
दीप्ति कासदे
आशिता

नाट्य प्रस्तुति

भीष्म साहनी कृत

कबिरा खड़ा बज़ार में

निर्देशन: अविजित सोलंकी
सह निर्देशन: दीपक नेमा
परिकल्पना: डॉ. अरुनाभ सौरभ
संगीत: अभिषेक दुबे
ताल वाद्य: संजय कोरी
नृत्य संरचना: सपना यादव, बादल सिंह
मंच प्रबंधन: अस्फिया जमाल
लाइट: प्रवीण नामदेव
मंच सज्जा: शहंशाह
वेशभूषा: जागृति गुप्ता
मेकअप: पूजा मालवीय
प्रॉपर्टी: शहंशाह
स्टेज मैनेजमेंट: अदर थियेटर भोपाल
विशेष सहयोग: बी.एड.एम.एड. एकीकृत प्रथम सत्र के विद्यार्थी

मार्गदर्शन एवं आभार

प्रो. जयदीप मंडल
प्राचार्य,
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

प्रो. बी. रमेश बाबू
अध्यक्ष,
शिक्षा विभाग,
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

प्रो. चित्रा सिंह
अध्यक्ष,
विस्तार शिक्षा विभाग,
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

आंतरिक स्त्रोत सदस्यगण:

डॉ. अश्विनी कुमार गर्ग, डॉ. एन. सी. ओझा, डॉ. सुरेश कुमार मकवाना, डॉ. सौरभ कुमार, श्री लोकेंद्र सिंह चौहान, डॉ. महेंद्र बरुआ, डॉ. गजेंद्र कुमार पांडेय, डॉ. मीनू पांडे, डॉ. दलेल सिंह, डॉ. गजेंद्र रावत, डॉ. पूनम अग्रवाल

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी., श्यामला हिल्स, भोपाल

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल के सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षुओं के लिए नाट्य कार्यशाला और प्रदर्शन के तहत..

अदर थियेटर, भोपाल के मार्गदर्शन में,
बी.एड.एम.एड. एकीकृत प्रथम सत्र के विद्यार्थियों की प्रस्तुति

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

भीष्म साहनी कृत

कबिरा खड़ा बज़ार में

निर्देशन: अविजित सेलंकी
परिकल्पना: डॉ. अरुणाभ सौरभ
संगीत निर्देशन: अभिषेक दुबे

दिनांक: 2 फरवरी 2023
समय: शाम 5:00 बजे से
स्थान: PSSCIVE निनाद सभागार, श्यामला हिल्स, भोपाल

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी., श्यामला हिल्स, भोपाल

नाटक के बारे में

भीष्म साहनी कृत 'कबिरा खड़ा बज़ार में' कबीर के एक मूल्यवान व्यक्तित्व को प्रस्तुत करनेवाली बहुमंचित और चर्चित नाट्यकृति है। सुविख्यात प्रगतिशील कथाकार भीष्म साहनी की 'हानूश' के बाद यह दूसरी नाट्य-रचना थी, जिसे हिन्दी रंगमंच पर व्यापक प्रशंसा प्राप्त हुई है।

कबीर की फक्कड़ाना मस्ती, निर्मम अक्खड़ता और युगप्रवर्तक सोच इस कृति में पूरी जीवन्तता के साथ मौजूद है। साथ ही इसमें यह भी उजागर हुआ है कि कबीर की साहित्यिकता सामाजिक जड़ता को तोड़ने का ही एक माध्यम थी, जिसके सहारे उन्होंने अनेकानेक मोर्चों पर संघर्ष किया। कृति से गुजरते हुए पाठक कबीर के इस संघर्ष को उसकी तमाम तत्कालीन सामाजिकता के बावजूद समकालीन भारतीय समाज की विभिन्न विकृतियों से सहज ही जोड़ पाता है।

संक्षेप में कहें तो भीष्म साहनी की यह नाट्यकृति मध्ययुगीन वातावरण में संघर्ष कर रहे कबीर को—उनके पारिवारिक और सामाजिक सन् दर्भों सहित—आज भी प्रासंगिक बनाती है।

निर्देशक के बारे में:

विगत १५ वर्षों से रंगकर्म में सक्रिय अविजित सोलंकी अदर थिएटर के संस्थापक सदस्य हैं। रंगकर्म की शुरुआत भोपाल में प्रसिद्ध निर्देशक अलखनन्दन के साथ। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय निर्देशकों के साथ रंगमंच का अनुभव। मप्र नाट्य विद्यालय के प्रथम बैच से एक वर्षीय डिप्लोमा एवं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली से निर्देशन में विशेषज्ञता के साथ तीन वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा। बतौर निर्देशक देश भर में विभिन्न समुदायों के साथ कार्यशालाओं का संचालन एवं नाटकों का निर्देशन। आपके द्वारा निर्देशित नाटकों में डाकघर, एंटिगनी, बड़े बड़े पंखों वाला बूढ़ा, कला धब्बा बादल की तरह आ रहा है, द लोअर डेप्थ्स, अधांतर आदि प्रमुख हैं।

आपके नाटक 'काला धब्बा बादल की तरह आ रहा है' को प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय नाट्य समारोह 'इंटर्नैशनल थिएटर फ़ेस्टिवल ऑफ़ केरला' एवं 'भारत रंग महोत्सव' में सराहा गया। 'रंगमंच एवं हिंसा' पर शोध हेतु राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय दिल्ली द्वारा वर्ष २०१९ में एकवर्षीय अध्येतावृत्ति एवं रंगमंच में नवाचार हेतु साहित्यिक संस्था स्पंदन द्वारा स्पंदन युवा पुरस्कार २०१९। नैशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ डिज़ाइन, एसटीएफएक्स यूनिवर्सिटी (कनाडा), राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय(विस्तार विभाग), मप्र नाट्य विद्यालय में बतौर अतिथि व्याख्याता अध्यापन।

वर्तमान में भोपाल स्थित टैगोरे स्कूल ऑफ ड्रामा में सहायक प्राध्यापक के रूप में अध्यापन एवं एकलव्य संस्था के साथ शिक्षा में रंगमंच विषय पर शोध जारी है।

पात्र परिचय

कबीर : रौशन
लोई : बादल तिवारी
रैदास : रवि
सेना : रश्मिबाला
पीपा: श्रद्धांजलि
बशीरा: अजीत
एक भक्त: परवेज आलम
सिकंदर लोदी: गुरमीत परमार
कोतवाल: प्रणव पवार
अधिकारी: श्वेता
मौलवी: अमूल
साथी 1: परवेज
साथी 2: प्रकाश
कायस्थ: सुचरिता
शेख: राजा गणेश
भिकारी: देवयानी

सिपाही 1: कल्याण
सिपाही 2: दिव्यज्योति
सिपाही 3: पवित्र
महंत: रागेश्वरी
साधु: सद्भावना
चेला 1: साकेत
चेला 2: पंकज
चेला 3: पवित्र
नागरिक 1: ऋषभ
नागरिक 2: अदिति
नागरिक 3: आकांक्षा
नाई: दुर्गेश
लड़का 1: सुधांशु
लड़का 2: आलोक यादव

भक्तगण(झांकी):
दुर्गेश, आलोक यादव, आंचल, प्राची, सुधांशु, पवित्र, हेमंत, शिवानी, ऋचा सांभरि, क्रिस्टी, निशा, सुप्रीत

विवाह नृत्य:
ऋचा सांभरि, आंचल बेहेरा, नेहा गंधर्व, सुभाषिनी, निशा, सुप्रीत, आसिमा, क्रिस्टी, राजलक्ष्मी, तनिष्क, श्रद्धांजलि, श्वेता

झीनी झीनी नृत्य समूह:
मिनिषा के., सुधांशु, ऋचा सांभरी, आसिमा, प्राची, नेहा, सुप्रीत, आकांक्षा, आंचल बहेरा, हेमंत, क्रिस्टी, दुर्गेश, निशा, श्रद्धांजलि, रवि, राजलक्ष्मी, शिवानी, सुभाषिनी, श्वेता

Feb 1, 2023, 12:04

Feb 1, 2023, 11:38

दोहे एवं गीत गाकर दिखाया कबीर का प्रेरक जीवन

जागरण सिटी रिपोर्टर। मध्यकाल में तानाशाही, धर्मांधता और आडंबरों के विरुद्ध संघर्ष करने वाले कबीर का जीवन आज भी समाज सुधार की दृष्टि से प्रासंगिक माना जाता है। उनके निर्भीक,दृढ़, फक्कड़ और मस्त मौला व्यक्तित्व ने समाज में एक नया दर्शन दिया था। गुरुवार को क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान द्वारा मंचित नाटक 'कबिरा खड़ा बाजार में' में कबीर का वहीं अंदाज और उसमें छुपी सीख नजर आई। इसमें 70 कलाकारों ने दोहों और गीतों को गाकर उनके आदर्श जीवन को प्रस्तुत किया। भीष्म साहनी द्वारा लिखित इस नाटक का निर्देशन अविजित सोलंकी ने किया। नाटक में दिखाया गया मध्यकाल में कि कबीर की फक्कड़ाना मस्ती, निर्मम अक्खड़ता और युगप्रवर्तक सोच थी। कबीर की साहित्यिकता, सामाजिक जड़ता को तोड़ने का एक माध्यम थी, जिसके सहारे उन्होंने अनेकानेक मोर्चों पर संघर्ष किया। नाटक में बताया गया कि गरीबी अभिशाप नहीं है, बल्कि इसके लिए समाज की कुरीतियां ही जिम्मेदार हैं।

नाटक में नजर आया 'कबीर' का जीवन दर्शन

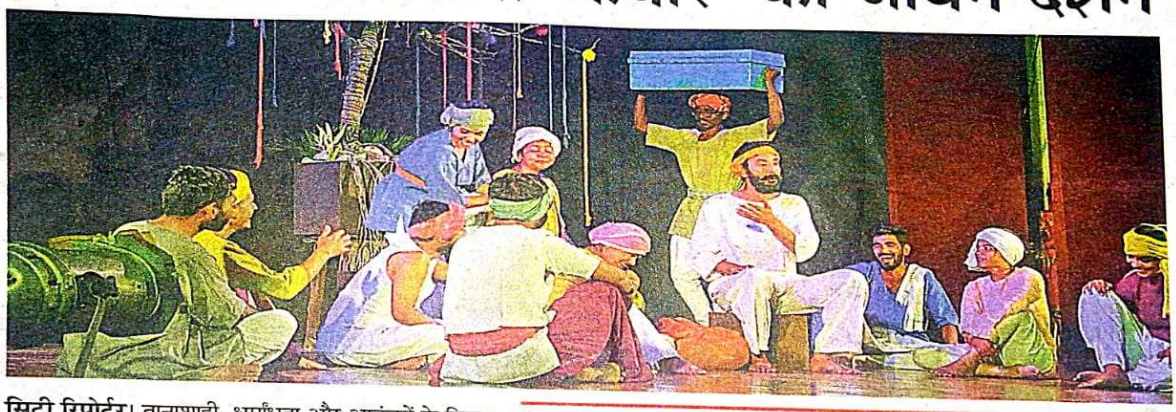

सिटी रिपोर्टर। तानाशाही, धर्मांधता और आडंबरों के विरुद्ध संघर्ष करने वाले कबीर का जीवन आज भी समाज सुधार की दृष्टि से प्रासंगिक माना जाता है। उनके निर्भीक, दृढ़, फक्कड़ और मस्त मौला व्यक्तित्व ने समाज में एक नया दर्शन दिया था। गुरुवार को क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान द्वारा मंचित नाटक 'कबीरा खड़ा बाजार में' का वहीं अंदाज और उसमें छिपी सीख नजर आई। इसमें 70 कलाकारों ने दोहों और गीतों को गाकर उनके आदर्श जीवन को प्रस्तुत किया। भीष्म साहनी द्वारा लिखित इस नाटक का निर्देशन अविजित सोलंकी ने किया।

'कबीरा खड़ा बाजार में' छिपी सीख नजर आई

नाटक में दिखाया गया मध्यकाल में कि कबीर की फक्कड़ाना मस्ती, निर्मम अक्खड़पन और युग प्रवर्तक सोच थी। कबीर की साहित्यिकता, सामाजिक जड़ता को तोड़ने का एक माध्यम थी, जिसके सहारे उन्होंने अनेकानेक मोर्चों पर संघर्ष किया। नाटक में बताया गया कि गरीबी अभिशाप नहीं है, बल्कि इसके लिए समाज की कुरीतियां ही जिम्मेदार हैं। उस काल की धर्मांधताएं, अनाचार और तानाशाही आदि के खिलाफ कबीर ने सत्यनिष्ठ और प्रखर व्यक्तित्व को दिखाकर समाज का मार्गदर्शन किया था।

MP BREAKING NEWS देश के दिल की हर ख़बर

Bhopal : क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में नाटक 'कबिरा खड़ा बाजार में' का मंचन

भीष्म साहनी लिखित नाटक में तानाशाही, धर्मांधता और आडंबरों के विरुद्ध संघर्ष की गाथा है, नाटको को दर्शकों की बहुत सराहना मिली

By श्रुति कुशवाहा Last updated **Feb 3, 2023**

Share Facebook Twitter Telegram Follow us on Google News

Kabira khada bazar me : भोपाल के क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में भीष्म साहनी लिखित नाटक 'कबिरा खड़ा बाजार में' का आयोजन हुआ। बेपरवाह, निर्भीक, दृढ़ और फक्कड़ व्यक्तित्व वाले मस्तमौला कबीर का

व्यक्तित्व सदियों से भारतीय मन को प्रभावित करता रहा है। उस युग की तानाशाही धर्मांधता और आडंबरों के विरुद्ध संघर्ष करने वाले कबीर आज भी हमारे बीच एक स्थायी और प्रेरक मूल्य की तरह स्थापित हैं। इसी कारण आज भी कबीर के पदों को समाज सुधार की दृष्टि से प्रासंगिक माना जाता है। भीष्म साहनी कृत 'कबिरा खड़ा बज़ार में' युग प्रवर्तक कबीर के व्यक्तित्व को प्रस्तुत करने वाली बहुमंचित और चर्चित नाट्यकृति है। सुविख्यात प्रगतिशील कथाकार भीष्म साहनी की इस नाट्य-रचना को हिन्दी रंगमंच पर व्यापक प्रशंसा मिली है। इस नाटक में संस्थान के B.Ed., M.Ed. एकीकृत के छात्र छात्राओं ने मंचन किया!

कबीर की फक्कड़ाना मस्ती, निर्मम अक्खड़ता और युगप्रवर्तक सोच इस कृति में पूरी जीवंतता के साथ मौजूद है। कबीर की साहित्यिकता सामाजिक जड़ता को तोड़ने का एक माध्यम थी, जिसके सहारे उन्होंने अनेकानेक मोर्चों पर संघर्ष किया। यह नाट्यकृति मध्ययुगीन वातावरण में संघर्ष कर रहे कबीर को उनके पारिवारिक और सामाजिक सन्दर्भों सहित आज भी प्रासंगिक बनाती है। इस नाटक के माध्यम से बताया गया कि गरीबी अभिशाप नहीं है बल्कि इसके लिए समाज की कुरीतियां ही जिम्मेदार हैं। नाटक में उस काल की धर्मांधता, अनाचार और तानाशाही के खिलाफ कबीर के निर्भीक, सत्यनिष्ठ और प्रखर व्यक्तित्व को दिखाने तथा कबीर को जीवंत करने का बेहतर प्रयास किया गया।

कार्यक्रम का प्रारंभ संस्थान के प्राचार्य प्रोफेसर जयदीप मंडल के मार्गदर्शन में किया गया। नाटक की परिकल्पना डॉ. अरुणाभ सौरभ द्वारा तैयार की गई, डॉक्टर अरुणाभ सौरभ संस्थान में समय-समय पर अपने मार्गदर्शन में रंगमंच का आयोजन कराते रहते हैं जिससे छात्र छात्राओं को मानव स्वभाव का सम्यक ज्ञान, व्यक्तित्व का विकास, संवाद कौशलों के विकास के अवसर प्राप्त होता है। शिक्षण प्रशिक्षण शास्त्र के विद्यार्थियों में नाटक द्वारा रचनात्मक सोच पाठ्यवस्तु को सक्रिय और आकर्षक बनाने के कौशलों का विकास हुआ है। नाटक का निर्देशन अविजित सोलंकी द्वारा किया गया। पिछले १५ वर्षों से रंगकर्म में सक्रिय अविजित सोलंकी अदर थिएटर के संस्थापक सदस्य हैं। रंगकर्म की शुरुआत भोपाल में प्रसिद्ध निर्देशक अलखनन्दन के साथ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय निर्देशकों के साथ रंगमंच का अनुभव है। मप्र नाट्य विद्यालय के प्रथम बैच से एक वर्षीय डिप्लोमा एवं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली से निर्देशन में विशेषज्ञता के साथ तीन वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा। बतौर निर्देशक देश भर में विभिन्न समुदायों के साथ कार्यशालाओं का संचालन एवं नाटकों का निर्देशन किया है। आपके द्वारा निर्देशित नाटकों में डाकघर, एंटिगनी, बड़े बड़े पंखों वाला बूढ़ा, कला धब्बा बादल की तरह आ रहा है, द लोअर डेप्थ्स, अधांतर आदि प्रमुख हैं! नाटक में संगीत अभिषेक दुबे द्वारा दिया गया। कलाकारों ने कबीर के दोहों और गीतों के माध्यम से नाटक में समां बांध दिया! यह नाटक समाज की कुरीतियों पर एक प्रहार है यह प्रस्तुति लंबे समय तक लोगों को याद रहेगी।

Feb 24, 2023

विद्यार्थियों की टिप्पणी:

"कबिरा खड़ा बज़ार में " भीष्म साहनी द्वारा रचित बहुमंचित और चर्चित नाट्यकृति है , जिसमें कबीर दास के मूल्यवान व्यक्तित्व को व्यापक रूप से प्रस्तुत किया गया है। इस नाटक के मंचन में मुझे लोई (कबीर की पत्नी) का किरदार निभाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, इसके लिए मैं कार्यशाला के संपूर्ण सदस्यों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। जीवन में जाने अनजाने हम कई किरदार निभाते हैं, खुद को बहुत से पात्रो में ढाल लेते हैं पर किसी नाटक के पात्र में खुद को ढालना और अभिनय करना जीवन जीने से किस तरह समानांतर भी है और भिन्न भी इसकी स्पष्टता का विकास कार्यशाला के संपूर्ण कार्यकाल के दौरान मुझमें होता रहा। इस नाटक के माध्यम से मुझे पंद्रहवीं शताब्दी के काशी में भ्रमण करने का, तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था एवं कबीर के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओ को समझने का बहुमूल्य अवसर प्राप्त हुआ, साथ ही साथ शिक्षा एवं नाट्यकला का समावेश भी देखने को मिला। शिक्षा में नाट्यकला का महत्वपूर्ण योगदान एवं स्थान है जिसे नकारा नहीं जा सकता और दोनों ही मनुष्य के विकास मे उपयोगी अवयव है, जिनके समागम को सहजने व सहयोग की आवश्यकता है। अंत में मैं इस कार्यशाला के संपूर्ण अनुभव को कुछ पंक्तियो में बांधना चाहूँगी :

"कई कहानियों से गुजर कर न जाने कितने किस्से बनाती हूँ।

हर रोज किसी की कहानी में, मैं अपना किरदार निभाती हूँ।

बस यू ही आपनी कहानी लिखती जाती हूँ।"

-बादल तिवारी (लोई)

Today I woke up by mashing my eyes in the dream of Kabir. And flashing the memories of past 11 days from reading script to practicing songs and exercises of following hands, going here and there makings home to Storms the audition and choosen as Kabir. I've no words to thank our respected Avijit sir who gives me this 3P's - positivity, passionate and patience.Asfiya mam for your direction and suggestions during practice. Dubey sir encouraging me for the role. Deepak sir treating as younger brother. Shanshah sir for guidance. Badal sir and sapna mam for dance(jo ki mai bahut achha kiya □) jagriti mam and mam who did my make-up(sorry mam name yaad nhi aa rha).Dr. Anurabh Saurabh sir who made all of this possible and the last but not the least all my dear friends. Thanks all of you I'm lacking of words. Some are becoming impatient what Roushan is writing□. Thats all thank you.....

Roushan- Kabir